प्रथम अंक | त्रैमासिक शैक्षणिक पत्रिका | जनवरी से मार्च 2025

TEACHERS OF BIHAR

प्रज्ञानिका

निःशुल्क

देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी टीचर्स ऑफ बिहार की प्रस्तुति

विद्यालय गाथा

विद्यालय गाथा में जानेंगे बिहार के सरकारी विद्यालयों के कार्यों की अमिट गाथा

शिक्षक गाथा

"शिक्षक गाथा केवल शब्दों की कहानी नहीं, यह समर्पण, संघर्ष और शिक्षा की अमर गीत है।"

शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार

शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार शिक्षा को नई दिशा देते हैं, जहां ज्ञान सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि जीवन का हिस्सा बन जाता है।

नई शिक्षा नीति 2020 और बिहार में शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के ढाँचे से होगा परिवर्तनकारी सुधार और पड़ेगा दूरगामी प्रभाव

ई-मैगजीन प्राप्त करने के लिए QR कोड स्कैन करें

शिक्षको के लिए प्रतियोगिताएं और अवसर

शिक्षा जगत की खबरें

डिजिटल टूल्स

शिक्षा का नया आयाम, सीखने-सिखाने का सहज और प्रभावी माध्यम!

नवीनतम ज्ञान-विज्ञान

"प्रज्ञानिका" त्रैमासिक पत्रिका है। जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार की तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। बिहार के शिक्षकों द्वारा इसे प्रकाशित किया गया है।इसमें शिक्षकों के विभिन्न शैक्षणिक कार्यों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका प्रकाशन अथवा प्रसारण वर्जित है।

इस पत्रिका का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।

प्रज्ञानिका 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।

पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसके साथ ही प्रकाशित हर सामग्री की ज़िम्मेदारी लेखक के स्वयं की है।

पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

प्रज्ञानिका

सम्पादक

कुमारी निधि

न्यू प्राथमिक विद्यालय सुहागी

किशनगंज

पुरोवाक सह पाठ-शोधक

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय

राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

तकनीकी सहयोग,

डिज़ाइन एवं साज-सज्जा

शिवेंद्र प्रकाश सुमन

इंजीनियर, मुजफ्फरपुर, बिहार

फाउंडर -सह -प्रेरणास्त्रोत

एवं मार्गदर्शक

शिव कुमार

उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर, बिक्रम, पटना

प्रज्ञानिका टीम

विशेष सहयोग

अनुपमा प्रियदर्शिनी
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुधहन
रघुनाथपुर, सिवान

विद्यालय एवं शिक्षक गाथा

केशव कुमार
बुनियादी विद्यालय बखरी
मुरौल, मुजफ्फरपुर

विविध

खुशबू कुमारी
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय एकडारा
कहलगांव, भागलपुर

सुर्खियाँ

मृत्युंजय कुमार
नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

नवाचार

रंजेश कुमार
प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया
फारबिसगंज, अररिया

तस्वीरें बोलतीं हैं

पुष्पा प्रसाद
राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट
कुचायकोट, गोपालगंज

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा
भभुआ, कैमूर

पोस्टर निर्माण

मधु प्रिया
मध्य विद्यालय रामपुर बी.एम.सी
फारबिसगंज, अररिया

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय मलहरिया
समेली, कटिहार

आलेख

विप्लव कुमार
उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय अरिहाना
आजमनगर, कटिहार

शिक्षक समाचार

अभिषेक कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय गोपालपुर नेउरा
सरैया, मुजफ्फरपुर

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल
राजकीय मध्य विद्यालय सहसपुर
बारूण, औरंगाबाद

प्रज्ञानिका

अनुक्रमणिका

02. शुभकामना सन्देश
विशिष्ट अतिथियों और शिक्षाविदों के सन्देश
04. सम्पादकीय
05. विद्यालय-गाथा
10. शिक्षक-गाथा
12. नई शिक्षा नीति 2020 और बिहार में शिक्षा
13. शिक्षण-संसाधन (TLM & PBL)
19. तस्वीरें बोलती हैं
21. नवाचार
23. प्रज्ञानिका आलेख
27. ज्ञान पोटली
36. प्रज्ञानिका डिजिटल टूल्स
39. कला परिचय
41. प्रज्ञानिका साहित्य
48. बच्चों का कोना
52. शिक्षकों के लिए प्रतियोगिताएँ और अवसर
55. स्वस्थ रहें मस्त रहें
57. शिक्षा जगत की खबरें
63. विविध

प्रज्ञानिका

संपादकीय

आप सभी सम्मानित शिक्षक साथियों को मेरा प्रणाम,अभिनंदन!
प्रज्ञानिका का यह प्रथम अंक आप सब को सौंपते हुए हम बहुत ही आनन्दित अनुभव कर रहे हैं।

शिक्षा हमारे जीवन की आधारशिला है, हम सब को गर्व होना चाहिए कि हम एक शिक्षक के रूप में अपनी सेवा दे रहे हैं। हम आपके लिए ले कर आए हैं "ToB प्रज्ञानिका"। यह पूर्णतः शिक्षकों को समर्पित एक शैक्षणिक पत्रिका है।इस शैक्षणिक पत्रिका को शिक्षकों ने ही तैयार किया है। इस पत्रिका में हमने शिक्षा से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा की है, जैसे कि नवाचारी शिक्षा पद्धतियाँ, शिक्षकों की भूमिका, बिहार के एक से बढ़कर एक सुंदर विद्यालय, शिक्षकों द्वारा तैयार शिक्षण अधिगम सामग्री, विभिन्न विद्यालयों की बेहतरीन तस्वीरें। इतना ही नहीं, हम चाहते हैं कि हम सब नए-नए ज्ञान-विज्ञान से स्वयं को अपडेट रखें।इसीलिए हमने कुछ ज्ञानवर्धक तथ्यों को भी इसमें जोड़ा है। तत्पश्चात् शिक्षा-जगत की खबरों से भी हम रु-ब- रु करवाने का प्रयास कर रहे हैं। कुछ पन्ने हमने बच्चों के लिए भी रखे हैं।इसमें बच्चों की पेंटिंग्स और कहानियाँ भी हैं जिन्हें बिहार के सरकारी विद्यालयों के बच्चों ने हम शिक्षकों के मार्गदर्शन में तैयार किया है।

सम्मानित साथियो! हमारा उद्देश्य है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। हमें उम्मीद है कि यह पत्रिका आपके लिए उपयोगी और जानकारीपूर्ण साबित होगी। इतना ही नहीं आप जो बेहतर कार्य कर रहे हैं हम उन कार्यों को प्रज्ञानिका में स्थान देंगे ताकि आपके द्वारा किये गए शैक्षणिक कार्यों एवं नवाचारों का अनुकरण अन्य विद्यालय द्वारा भी किया जाए।
प्रज्ञानिका के लिए हमने कोई विशेषज्ञ या तकनीकी टीम की सहायता नहीं ली है। इसे हमारे और आपके जैसे शिक्षकों के साथ मिलकर तैयार किया गया है। जिनका अनुभव और ज्ञान इस पत्रिका को समृद्ध बनाता है।

सम्मानित साथियो! प्रज्ञानिका आपकी ही पत्रिका है। हम आपको इस पत्रिका के साथ जुड़ने और शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए आमंत्रित करते हैं। आप भी हमसे जुड़िये और अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव हमें दीजिये।

कुमारी निधि
राजकीय शिक्षक सम्मान प्राप्त
न्यू प्राथमिक विद्यालय सुहागी,
किशनगंज बिहार
Nidhisarojc@gmail.com

प्रज्ञानिका

पुरोवाक्

'Teachers of Bihar' बिहार की जानी-मानी एवं सर्वतः पहचानी जाने वाली एक "Professional Learning Community OF the teachers, FOR the teachers and BY the teachers" है।

नित नवीन प्रयोगों से इसने बिहार के शिक्षकों एवं शिक्षा-व्यवस्था को काफी प्रभावित किया है। इस समूह से जुड़े तमाम शिक्षक विभिन्न नवाचारी गतिविधियों के संचालक बने हुए हैं। अनेक ऐसे अवसर भी आए हैं जब इसकी गतिविधियों को राज्य एवं केंद्र के शिक्षा विभाग अपर मुख्य सचिवों के द्वारा नोटिस तथा उद्धृत भी किया जाता रहा है।

इसी कड़ी में यह "प्रज्ञानिका" भी एक नया आयाम गढ़ने हेतु आप सबों के बीच उपस्थापित हो रही है।

अपने नाम के अनुसार यह पत्रिका तमाम शिक्षकों के लिए निश्चित ही एक जागरण-टॉनिक के रूप में काम करेगी।यह विभिन्न शिक्षकों की भिन्न-भिन्न रुचियों के अनुसार उनकी छिपी प्रतिभाओं को उद्वेलित करेगी। परिणामस्वरूप पत्रिका के अनेक स्तम्भों के अनुरूप उनकी भी लेखनी से नये-नये भावोद्गार प्रसूत होने लगेंगे। फलतः बिहार की शिक्षा नया विस्तार प्राप्त करेगी।

देश स्तर पर होने वाली शैक्षिक घटनाओं, शिक्षकों से सम्बन्धित नये अवसर, विभिन्न प्रतियोगिताओं, डिजिटल ज्ञान, बोलती तस्वीरों, कुछ शैक्षिक साहित्य इत्यादि को समेटे यह पत्रिका आपके अवलोकनार्थ, ध्यानार्थ, ज्ञानार्थ एवं परमार्थ प्रस्तुत है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि यह आपके लिए अत्यंत उपयोगी साबित हो और आप इसके मुरीद हों।

डॉ. विनोद कुमार उपाध्याय
राजकीय आदर्श मध्य विद्यालय अहियापुर, अरवल

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यालय, डरहक, रामगढ़, कैमूर

संकल्प से सिद्धि का पर्याय

विवेकानंद की उक्ति "तुम कभी किसी समस्या से भयभीत हो, तो उससे भागो मत, ठहरो और सामना करो" ।

बिहार ही नहीं देश के अधिकांश सरकारी विद्यालयों में समस्याओं की लम्बी फेहरिस्त है, कहीं भौतिक संसाधन का रोना, कहीं आर्थिक कमी, विद्यालय के प्रति सामाजिक दूरी, अभिभावकों की निष्क्रियता इत्यादि। लेकिन कहा गया है"हौसला बुलंद कर रास्तों पर चल दे, तुझे तेरा मुकाम मिल जाएगा। अकेला तू पहल कर, काफिला खुद बन जाएगा ।तमाम विपरीत एवं विषम परिस्थितियों के बावजूद कैमूर जिला के रामगढ़ प्रखंड अंतर्गत राजकीयकृत मध्य विद्यालय डहरक एक अलग पहचान बनाने में कामयाबी के पथ पर निरंतर अग्रसर है।

जानकारी के मुताबिक यह विद्यालय सन् 1939 में स्थापित है।फरवरी 2014 से विद्यालय के स्वरूप में बदलाव प्रारंभ हुआ। जो वर्तमान समय में यह एक मिसाल कायम कर रहा है। प्रभारी प्रधानध्यापक के रूप में कार्यरत हरिदास शर्मा की सोच, विद्यालय के छात्र, शिक्षक, रसोइया तथा जनसमुदाय की पहल ने जिला के उत्कृष्ट विद्यालयों की श्रेणी में विद्यालय को ला खड़ा किया है।विद्यालय व्यवस्थित रूप से प्रतिदिन अपने कार्यों का नियमित संपादन कर रहा है, जिससे अभिभावकों में विद्यालय के प्रति रूचि बढ़ी है। विद्यालय में हो रहे सकारात्मक परिवर्तन को देखते हुए सबें के द्वारा पूर्ण सहयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में विद्यालय की आधारभूत संरचना, भौतिक संसाधन, शिक्षण गतिविधियाँ इत्यादि सुव्यवस्थित ढंग से विद्यालय के प्रधानाध्यापक के निर्देशन में शिक्षक तथा छात्र मिलकर पूरा कर रहे हैं।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यालय, डरहक, रामगढ़, कैमूर

चेतना सत्र :- विद्यालय का शुभारम्भ चेतना-सत्र से किया जाता है, जिसमे सभी शिक्षक तथा छात्रों की जिम्मेदारी पूर्व से निर्धारित की गयी है, जिनके द्वारा क्रियान्वयन किया जाता है। चेतना सत्र के अन्तर्गत विद्यालय की साफ़-सफाई, पी.टी. विहार गीत, राष्ट्रगान, सविधान की प्रस्तावना, समाचार वाचन, क्विज़, बापू की पाती, स्वच्छता इत्यादि कार्य नियमित रूप से कराया जाता है।

कला समेकित शिक्षा (A.I.L):- विद्यालय में कला के साथ शिक्षण को समावेशित कर बच्चो के क्रियात्मक कौशल को विकसित करने हेतु विभिन्न तरह के मॉडल कोलाज चित्र-निर्माण, प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है।

बाल-संसद, मीनामंच बाल हठ सेना, यूथ क्लब तथा इको क्लब का गठन विद्यालय में किया गया है। नवाचार के अंतर्गत बल-हठ सेना का गठन किया गया है। युवाओं में नैतिक विकास, खेल इत्यादि तथा विद्यालय के पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित करने के लिए यूथ क्लब तथा इको क्लब गठित किया गया है। बाल संसद एवं मीनामंच द्वारा विद्यालय में शैक्षिक गतिविधियों के साथ-साथ सह-शैक्षिक गतिविधियों में सहयोग प्रदान किया जाता है।

बाल-हठ सेना का गठन स्वच्छता अभियान के दौरान किया गया था जिसकी प्रशंसा कैमूर के जिलाधिकारी "डा० नवल किशोर चौधरी द्वारा किया गया था तथा उन्हें प्रोत्साहित भी किया गया था। बाल-हठ सेना स्वच्छता के साथ-साथ नामांकन अभियान, उपस्थिति, बच्चों का छीजन रोकने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

मध्य विद्यालय, डरहक, रामगढ़, कैमूर

विद्यालय में ICT का प्रयोग - तकनीक (Technology) की बढ़ती संभावनाओं तथा उपयोग को देखते हुए बच्चों में इसकी समझ कैसे विकसित की जाये तथा शिक्षण में इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए विद्यालय द्वारा विगत कई वर्षों से ICT उपकरणों के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जा रहा है। विद्यालय द्वारा विशेष रूप से यह ध्यान दिया जाता है की ICT की समझ बच्चों में विकसित हो एवं बच्चे स्वयं इसका उपयोग तथा प्रयोग करना सीखे। बच्चों के विषय वस्तु संबंधी विडियो को लैपटॉप, मोबाइल तथा प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रदर्शित कर उसके बारे में विस्तृत रूप से समझाया जाता है, ताकि बच्चे आसानी से रोचकता के साथ जल्द सीखे। नयी शिक्षा निति 2020 में भी बच्चों को वर्ग 6 से ही Technology के बारे में जानकारी देने की बात कही गयी है, यह विद्यालय पूर्व से ही अपने छात्रों के यह सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

भौतिक संसाधन :- विद्यालय में लगभग सभी आवश्यक संसाधन उपलब्ध है। सभी वर्ग कक्ष में बच्चो के लिए बेंच
डेस्क, पंखा, लाइट की व्यवस्था की गयी है। कार्यालय सुसज्जित किया गया है। विद्यालय परिसर में वैपर लाइट, आटोमेटिक रिंग बेल, इन्वर्टर, I.C.T का प्रयोग हेतु स्क्रीन इन्लार्जर, प्रोजेक्टर तथा लैपटॉप की व्यवस्था उपलब्ध है। चेतना सत्र के लिए ड्रम एवं माइक की व्यवस्था की गयी है। बालक एवं बालिका के लिए अलग-अलग शौचालय की व्यवस्था है, जिसमे 24x7 घंटे पानी की उपलब्धता रहती है। इसके साफ-सफाई का समुचित ख्याल रखा जाता है।

पेय-जल के लिए हैण्ड-पंप, समरसेबुल के साथ Government of India central Ground Water Board द्वारा स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध है। बच्चों के हाथ धोने की असुविधा को ध्यान में रखते हुए 10 नल लगाया गया है।
विद्यालय के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों के सफल सञ्चालन हेतु प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में सुनियोजित कार्य योजना तैयार किया गया है जिसके द्वारा शिक्षक एवं छात्र गतिविधियों को सम्पादित करते है। वर्तमान समय में विद्यालय किसी भी निजी विद्यालय से कम नहीं है। यहाँ के जन सहयोग द्वारा अन्य योजनाएं भविष्य में लागू करने के लिए प्रधानाध्यापक कृतसंकल्पित है, ताकि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की प्रतिभा को और निखारा जा सके।

हरिदास शर्मा
प्रधानाध्यापक
राजकीयकृत मध्य विद्यालय डहरक,
रामगढ कैमूर

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

नया प्राथमिक विद्यालय सुहागी,

राजधानी पटना से चार सौ किलोमीटर की दूरी पर किशनगंज जिले के बहुत ही सुदूर ग्रामीण क्षेत्र का एक विद्यालय सुहागी। जिसकी गाथा आपको ना केवल रोमांचित करेगी बल्कि सोचने के लिए भी विवश कर देगी कि हमारे शिक्षक कितने मेहनती और लगनशील हैं।

पूरी कहानी जानने के लिए हम आपको लिए चलते है दस वर्ष पहले के फ्लैश बेक में जी हाँ साल था दो हज़ार चौदह और पिछले सात वर्षो से यह विद्यालय कभी खेत मे तो कभी किसी पेड़ के नीचे चला करता था। इसी कड़ी के तहत इस विद्यालय में पदस्थापित हुई शिक्षिका कुमारी निधि। फिर क्या था विद्यालय ने अपना रंग बदलना आरम्भ कर दिया। देखते ही देखते ना केवल भूमि का निबंधन बल्कि दो मंजिला इमारत बन कर खड़ी हो गई।

सात वर्षों से खुले मैदान में चल रहा था स्कूल

पोषक क्षेत्र के अभिभावक बतातें हैं कि इस विद्यालय का अनुकरण आस पास के निजी विद्यालय भी कर रहें हैं। विद्यालय में शुद्ध पेय जल से लेकर पुस्तकालय तक उपलब्ध है। इतना ही नही विशेष नामांकन के लिए शिक्षक घर घर जा कर नामांकन अभियान चलातें है। आपको यह भी बताते चलें कि इस विद्यालय में कुल पांच शिक्षक हैं। और सभी लोग एक गुलदस्ते की भांति मिलजुल कर कार्य करते हैं। आए दिन उक्त विद्यालय में नवाचार, नए नए स्वनिर्मित TLM इत्यादि के द्वारा आधुनिक तरीके से कक्षाएं संचालित की जाती है।

विद्यालय गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

नया प्राथमिक विद्यालय सुहागी में दीक्षांत समारोह के साथ साथ स्थापना दिवस भी मनाया जाता है जिसमे विद्यालय के नन्हे मुन्ने बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये जाते हैं। समय समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित कर और पुरस्कार इत्यादि वितरित कर बच्चों के उत्साह को बढाने का कार्य भी किया जाता है।

चेतना सत्र में बच्चे बड़े उत्साह से भाग लेतें है। बाल संसद की ज़िम्मेदारी होती है कि सभी बच्चों की भागीदारी बारी बारी से हो। आई सी टी का भी प्रयोग कक्षा कक्ष में किया जाता है। छोटे छोटे बच्चे लेपटॉप पर माइक्रोसॉफ्ट पेंट में ड्रॉइंग करते नज़र आतें हैं। इतना ही नहीं बच्चों को हमारी सांस्कृतिक धरोहरों से जोडे रखने के लिए ईद के अवसर पर सेवई पार्टी तो होली के अवसर पर रंगों के साथ होली मिलन समारोह भी आयोजित की जाती है।

लाइब्रेरी की है व्यवस्था

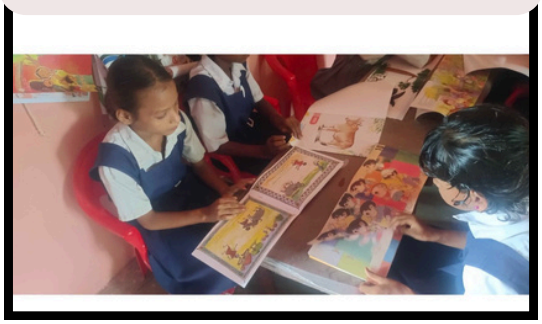

आई सी टी का भी होता है प्रयोग

उक्त विद्यालय की राजकीय शिक्षक सम्मान से सम्मानित प्रभारी प्रधान शिक्षिका कुमारी निधि बताती हैं कि शुरू शुरू में बच्चे बीच मे ही पढ़ाई छोड़ देते थे। हमने कई बार अभिभावक गोष्ठी कर के आम सभा कर के और इतना ही नही हम तो यह भी सुनिश्चित करतें है कि छात्र छात्रा पांचवी के बाद छठी कक्षा में दूसरे विद्यालय में नामांकन करवाए हैं कि नहीं। और हम खुद जा कर बच्चों का नामांकन आगे की पढ़ाई के लिए करवातें हैं। और नतीजा आज यह है कि ज़ीरो ड्रॉपआउट है। पोषक क्षेत्र के सभी बच्चे स्कूलों में है। यही मेरा सबसे बड़ा अवार्ड है।

शिक्षक गाथा

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक की कहानी

न्यु प्राथमिक विद्यालय तरहनी

सिकेंद्र कुमार सुमन

मैं सिकेंद्र कुमार सुमन एक मध्यम वर्गीय परिवार से संबंध रखता हूं। वर्ष 2007 में पंचायत शिक्षक के रूप में बतौर शिक्षक अपने करियर की शुरुआत अपने ही पैतृक गांव में एक भवनहीन विद्यालय से की । उसके बाद शिक्षण कार्य को करते हुए अपने ही गांव के बच्चों को पढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वर्ष 2009 में विद्यालय का नवनिर्मित भवन बनकर तैयार हुआ और न्यू प्राथमिक विद्यालय तरहनी भौतिक रूप से अस्तित्व में आया। बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए संकल्पित होकर निरंतर कुछ अलग करने की चाह बनी रही इसी क्रम में वर्ष 2012 में विद्यालय में पदस्थापित प्रधानाध्यापिका के अन्यत्र सेवा में चयन हो जाने के पश्चात मुझे मुझे मेरे विद्यालय का प्रभार मिला। नियुक्ति तिथि से बतौर सहायक शिक्षक के रूप में कार्य करने के बाद वर्ष 2012 में प्रभारी प्रधान अध्यापक के रूप में एक नई जिम्मेदारी मिली । तब से विद्यालय को एक नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए कार्य करने की दृढ़ इच्छा शक्ति एक नई शुरुआत की गई। कहा जाता है की *"परिवर्तन एक दिन में नहीं होता परंतु एक दिन जरूर होता है।"*

मन में एक ऐसा विद्यालय बनाने का संकल्प था जो किसी भी मायने में निजी विद्यालयों से कम ना हो और हमारे यहां पढ़ने वाले बच्चों को वह सारी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके जिसके वह हकदार हैं इसी संकल्प के साथ आगे बढ़ते हुए मैंने विद्यालय में नित्य नए प्रयोग किए ताकि बच्चे और बच्चों के साथ जुड़े उनके अभिभावकों को भी शिक्षा और शिक्षा के महत्व से परिचित कराया जा सके। विद्यालय को इस तरह विकसित करने में वर्ष 2013 से पदस्थापित शिक्षक श्री धीरज कांत रजक, शिक्षिका रफत परवीन तथा शिक्षिका रक्षा कुमारी ने मेरा भरपूर सहयोग किया और एक टीम की तरह मिलकर हमने विद्यालय की रूपरेखा को बदलने का प्रयास किया ।

ऑनलाइन परीक्षा देतें हैं बच्चें

संकलन :- केशव कुमार, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक की कहानी

विद्यालय में बच्चों के लिए पढ़ने का बेहतर माहौल विकसित किया गया ताकि बच्चे आनंददाई रूप से शिक्षा ग्रहण कर सकें, इसके लिए स्वयं और समुदाय के स्तर से भी प्रयास किए गए।

छात्रों का संबंध केवल विद्यालय की दीवारों के अंदर होने वाली शिक्षण प्रक्रिया से न हो बल्कि उन्हें सामाजिक सरोकार से भी परिचित कराया जाए इसके लिए भी विद्यालय स्तर पर प्रयास किए गए जिसका नाम रखा गया *प्रत्येक माह एक खास व्यक्ति*। इसके अंतर्गत समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को विद्यालय में आमंत्रित कर बच्चों के साथ उन्हें रूबरू कराने का प्रयास किया गया ।

बच्चों को टेक्नोलॉजी फ्रेंडली बनाने के उद्देश्य से विद्यालय में विभिन्न तरह के नवाचार किए गए जिसमें प्रमुख रूप से ऑनलाइन परीक्षा, ऑनलाइन परीक्षा परिणाम, डिजिटल माध्यम से बाल संसद का गठन, बच्चों का ईमेल तथा बच्चों को ICT उपकरणों की मदद से पढ़ाने की तकनीक शामिल रहीं।

विद्यालय में टाई बेल्ट सिस्टम, बेहतर ड्रेस कोड, लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लास, ऑडियो-वीडियो लर्निंग, ऑटोमेटेड स्कूल बेल, डिजिटल कंटेंट, बाला पेंटिंग्स, डाइनिंग रूम, विद्यालय और बच्चों की सुरक्षा हेतु cctv कैमरा इत्यादि की सुविधा उपलब्ध कराकर बेहतर शिक्षण का माहौल विकसित किया गया।

सोशल और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर भी विद्यालय की पहचान को स्थापित किया गया जैसे फेसबुक पेज, यूट्यूब चैनल, ट्विटर अकाउंट, गूगल मैप्स पर उपस्थिति इत्यादि।

बच्चों, विद्यालय और समाज के साथ साथ शिक्षकों और विभाग के लिए भी कार्य किए गए जिसके अंतर्गत शिक्षकों के तकनीकी मार्गदर्शन हेतु यूट्यूब कंटेंट का निर्माण तथा मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम हेतु सुरक्षित शनिवार से संबंधित ई कंटेंट का निर्माण शामिल रहा।

इन्हीं सब कार्यों और प्रयासों को सरकार के द्वारा सराहा गया और मेरा चयन राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2024 के लिए किया गया। यह पुरस्कार पाकर मैं काफी उत्साहित हूं क्योंकि इस पुरस्कार ने मुझे शिक्षा हित में कार्य करने की एक नई ऊर्जा दी हैं।

यह पुरस्कार सिर्फ मुझे नहीं मेरे विद्यालय के बच्चों शिक्षकों मेरे परिवार, विभाग के साथ साथ उन सभी को मिला नहीं जिन्होंने मुझे कुछ नया और बेहतर करने हेतु हमेशा प्रोत्साहित किया हैं ।

नई शिक्षा नीति 2020 और बिहार में शिक्षा

शिव कुमार, पटना

शिक्षा किसी भी समाज की आधारशिला होती है, जो न केवल बौद्धिक और नैतिक विकास में सहायक होती है, बल्कि राष्ट्र की समृद्धि और उन्नति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में शिक्षा नीति समय-समय पर बदलती रही है ताकि इसे आधुनिक आवश्यकताओं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप ढाला जा सके। इसी दिशा में, 2020 में एक व्यापक और दूरदर्शी नई शिक्षा नीति लागू की गई, जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है। यह नीति शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है। बिहार जैसे राज्य में, जहां शिक्षा प्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है, नई शिक्षा नीति का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। इस आलेख में हम नई शिक्षा नीति 2020 के कार्यान्वयन और बिहार की शिक्षा प्रणाली पर इसके प्रभावों का विश्लेषण करेंगे। नई शिक्षा नीति 2020 को लागू करने के पीछे मुख्य उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना था। इसमें स्कूल शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक कई बड़े बदलाव किए गए हैं। पारंपरिक 10+2 शिक्षा प्रणाली को 5+3+3+4 के नए ढांचे में परिवर्तित किया गया, जिससे प्रारंभिक शिक्षा को मजबूत करने और सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने पर जोर दिया गया। इस नीति में मातृभाषा को प्राथमिक स्तर की शिक्षा का माध्यम बनाने की अनुशंसा की गई है, जिससे विद्यार्थियों की समझ और ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता बढ़े। इसके अतिरिक्त, नीति में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने, मूल्यांकन प्रक्रिया को अधिक समग्र बनाने और डिजिटल शिक्षा को प्रमुखता देने की बात कही गई है।

बिहार, जो देश के सबसे बड़े जनसंख्या वाले राज्यों में से एक है, शिक्षा की गुणवत्ता और संसाधनों की कमी जैसी कई समस्याओं से जूझ रहा है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में बिहार ने शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार किए हैं, लेकिन अभी भी कई स्तरों पर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, नई शिक्षा नीति 2020 बिहार के लिए एक नया अवसर प्रदान करती है। बिहार में इसका सफल कार्यान्वयन कई स्तरों पर बदलाव ला सकता है, जिसमें शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार, विद्यालयों की आधारभूत संरचना का सुदृढ़ीकरण, डिजिटल शिक्षा का विस्तार, और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना शामिल है। नीति के तहत, शिक्षकों के प्रशिक्षण और उनकी भर्ती प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाने पर विशेष जोर दिया गया है। बिहार में अब शिक्षकों की कमी नहीं है और प्रशिक्षित शिक्षक उचित संख्या में उपलब्ध हैं। इससे शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षित किया जा रहा है। हालांकि, शिक्षकों को उनकी वास्तविक आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण (नीड बेस्ड असेसमेंट ट्रेनिंग) अभी तक नहीं दिया जा रहा है। विशेष रूप से, शिक्षक प्रशिक्षण के मामले में, कभी भी स्वयं शिक्षकों से यह नहीं पूछा जाता कि उन्हें किस प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। यह एक बड़ी समस्या है क्योंकि शिक्षकों की वास्तविक चुनौतियाँ और जरूरतें जाने बिना, प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करना कठिन होता है। बिहार में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए कुछ नए और नवाचारपूर्ण प्रयास किए जाने चाहिए। स्कूलों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित शिक्षा प्रणाली लागू की जानी चाहिए, जिससे व्यक्तिगत स्तर पर विद्यार्थियों की सीखने की गति और जरूरतों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार किया जा सके। वर्चुअल रियलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) जैसी तकनीकों का उपयोग करके शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए इमर्सिव लर्निंग अनुभव उपलब्ध कराए जा सकते हैं। इसके अलावा, स्कूलों में 'सीखो और कमाओ' (Learn and Earn) मॉडल को अपनाया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ प्रायोगिक अनुभव प्राप्त हो सके। बिहार में स्मार्ट स्कूल हब बनाए जा सकते हैं, जहां शिक्षक और विद्यार्थी नवीनतम तकनीकों का उपयोग कर सकें और वैश्विक मानकों के अनुसार शिक्षा ग्रहण कर सकें। साथ ही, कस्टमाइज़्ड ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म्स विकसित किए जाने चाहिए, जो छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यक्रम प्रदान करें।

बिहार में शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक बनाने के लिए अब समय आ गया है कि हर विद्यालय को डिजिटल विद्यालय के रूप में विकसित किया जाए। जैसे माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा 'हर घर नल-जल योजना' लागू कर हर घर तक स्वच्छ जल पहुँचाने की व्यवस्था की गई, वैसे ही अब प्रत्येक विद्यालय में स्मार्ट कक्षाएँ, ई-लाइब्रेरी, डिजिटल लैब्स और हाई-स्पीड इंटरनेट जैसी सुविधाएँ सुनिश्चित करने हेतु 'हर विद्यालय डिजिटल विद्यालय' योजना उनके आठवीं निश्चय के रूप में की जानी चाहिए। डिजिटल शिक्षण से विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में गुणात्मक वृद्धि होगी और वे तकनीक-सक्षम भविष्य के लिए तैयार हो सकेंगे।

बिहार में समावेशी शिक्षा को लागू करने में भी यह नीति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। राज्य में आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। NEP 2020 ने इस समस्या के समाधान के लिए कई उपाय सुझाए हैं, जिनमें छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार, लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना और दिव्यांगजनों के लिए विशेष सुविधाओं की व्यवस्था शामिल है। अगर इन बिंदुओं पर गंभीरता से कार्य किया जाए, तो बिहार के शिक्षा परिदृश्य में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिल सकता है।

हालांकि, नीति के कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं। बिहार में अभी भी सरकारी विद्यालयों में आधारभूत ढांचे की कमी, डिजिटल संसाधनों की सीमित पहुँच जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। इसके अलावा, बिहार में शिक्षा का राजनीतिकरण और प्रशासनिक ढांचे की जटिलताएँ भी नीति के सफल कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। इस प्रकार, इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकार, शिक्षाविदों और समाज को मिलकर काम करना होगा।

नई शिक्षा नीति 2020 बिहार के लिए एक सुनहरा अवसर प्रस्तुत करती है। यदि इस नीति को सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह न केवल बिहार की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ कर सकती है, बल्कि राज्य के विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार भी कर सकती है। इसके लिए बिहार सरकार को नीति के कार्यान्वयन की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे, शिक्षकों के प्रशिक्षण को प्राथमिकता देनी होगी, डिजिटल संसाधनों को विकसित करना होगा और विद्यार्थियों को सीखने के अधिक अवसर प्रदान करने होंगे। समग्र रूप से, यदि इस नीति को सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह बिहार की शिक्षा प्रणाली को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती है और राज्य के लाखों विद्यार्थियों के भविष्य को उज्जवल बना सकती है।

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

M.S BMP 2 dehri on sone Rohtas

मध्य विद्यालय सैनो, जगदीशपुर, भागलपुर

राजकीय कन्या मध्य विद्यालय कुचायकोट, गोपालगंज

प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया, प्रखंड- फारबिसगंज, जिला- अररिया

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

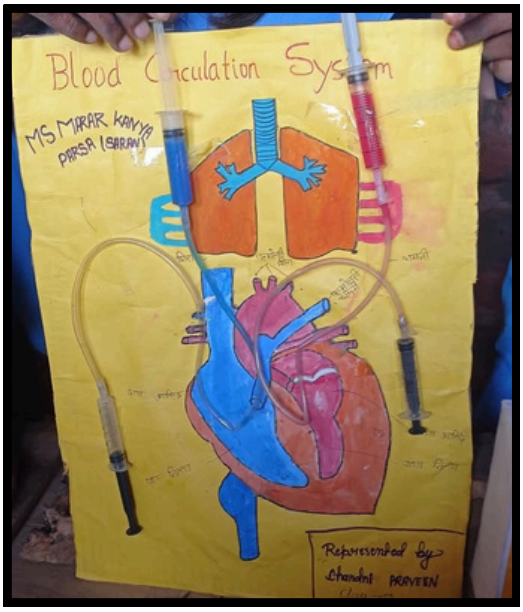

मध्य विद्यालय मरार (कन्या) परसा, सारण

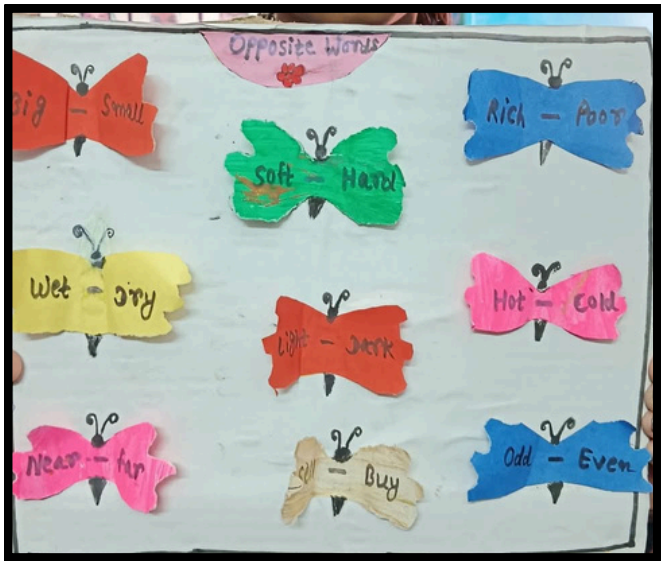

राजकीय मध्य विद्यालय तेतरिया, पूर्वी चंपारण

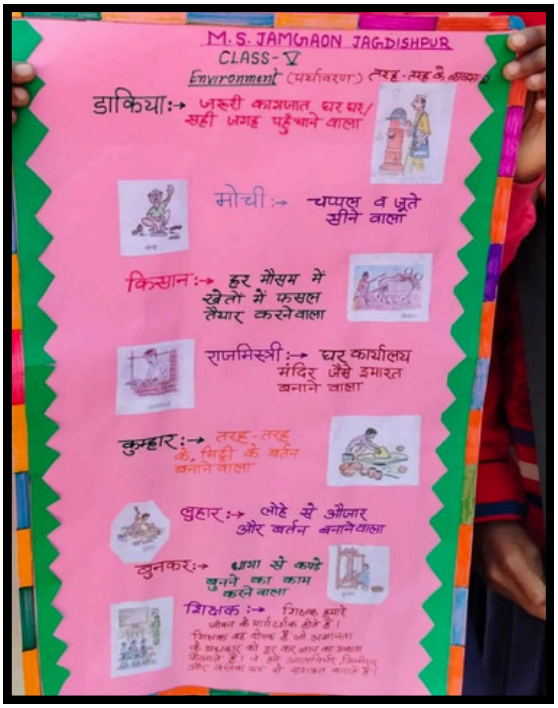

म०वि० जमगांव, जगदीशपुर, भागलपुर

आदर्श मध्य विद्यालय तुलसिया दिघलबैंक, किशनगंज

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा, भभुआ, कैमूर

प्राथमिक विद्यालय ब्लॉक हेड क्वाटर कस्बा पूर्णिया

रविकांत शास्त्री भागलपुर

ज्योति नवीन

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

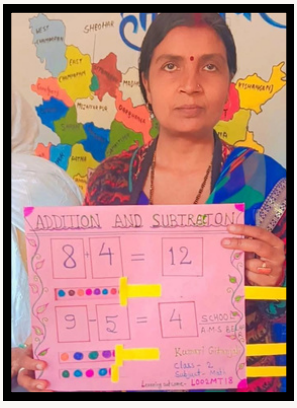

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

M.S. SAHOKHAR,
BIHARSHARIF, NALANDA

UMS BARAMANI, THAKURGANJ, KISHANGANJ

M.S. SAHOKHAR,
BIHARSHARIF, NALANDA

R.U.M.S. Dudhahan, Raghunathpur, Siwan

शिक्षण संसाधन

धीरज कुमार, कैमूर

M.S. Choudhary Tola, sonvarsha, Bihpur, Bhagalpur

High School Sheonar Mokama, patna

UHS KATAHAN, MEHSI EAST Champaran

M. S. DUDHPURA, SAMASTIPUR

शिक्षक - छात्र पन्ना

तस्वीरें बोलती हैं

M. S. Bithala, Parbata, Khagadia

M. S. Rasidpur Diara, Nathnagar Bhagalpur

P. S. Aadiwasi tola Madhura farbisganj, Araria

UHS Rajepur, Mehsi, East Champaran, Bihar

PM Shri middle school saino, jagadishpur, Bhaghalpur

M.S. SAHOKHAR, BIHARSHARIF, NALANDA

PHOTO OF THE DAY

ऊर्दू मध्य विद्यालय
काजीचक, रफीगंज,
औरंगाबाद

प्राथमिक विद्यालय मंडल टोला
नुनगरा, कदवा, कटिहार

प्राथमिक विद्यालय
छुरछुरिया,
फारबिसगंज, अररिया

नवसृजित प्राथमिक
विद्यालय सिरमाटीकर,
बाराहट, बांका

मध्य विद्यालय
जगदीशपुर, भागलपुर

उत्क्रमित मध्य विद्यालय
टेंगरा, बेलहरा, बांका

मध्य विद्यालय
जगदीशपुर, भागलपुर

उत्क्रमित मध्य
विद्यालय मटियारा,
कोईलवर, भोजपुर

उत्क्रमित मध्य
विद्यालय खेसरैल,
कुर्साकांटा, अररिया

नवाचार

ऋतुराज जायसवाल

नवाचार का अर्थ है किसी भी चीज़ में ऐसा बदलाव करना जिससे वह अधिक सुलभ, उपयोगी और प्रभावी बन जाए। जब यह नवाचार शिक्षा के क्षेत्र में अपनाया जाता है, तो यह छात्रों और विद्यालयों के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हो सकता है। बिहार के शिक्षक इसी सोच के साथ शिक्षा में नित नए प्रयोग कर रहे हैं और विद्यार्थियों को एक नए तरीके से सीखने का अवसर प्रदान कर रहे हैं।

आज बात कर रहे हैं समस्तीपुर जिले के उत्क्रमित मध्य विद्यालय मोहनपुर के शिक्षक ऋतुराज जायसवाल की, जिन्होंने पारंपरिक शिक्षण पद्धति से अलग हटकर नवीन तरीकों को अपनाया और बच्चों के लिए शिक्षा को रोचक व प्रभावी बनाया। उन्होंने कक्षा शिक्षण को केवल किताबों और व्याख्यानों तक सीमित न रखकर गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाने का प्रयास किया, जिससे बच्चों को सीखने में अधिक रुचि आने लगी। उनकी इस नवाचार युक्त शिक्षण शैली को छात्रों ने काफी पसंद किया और यह उनके सीखने की क्षमता को भी बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ।

ऋतुराज जायसवाल द्वारा अपनाई गई गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धति केवल एक विषय तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने गणित, हिंदी और विज्ञान जैसे विषयों को भी सरल व व्यावहारिक रूप में समझाने के लिए अनूठे तरीके अपनाए। उदाहरण के लिए, गणित के कठिन सवालों को खेल के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे बच्चे खेल-खेल में संख्याओं और सूत्रों को समझने लगे। हिंदी भाषा को रोचक बनाने के लिए कहानी और संवाद के माध्यम से व्याकरण व लेखन सिखाया, जबकि विज्ञान को प्रयोगों और पर्यावरणीय गतिविधियों से जोड़कर बच्चों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया।

ऋतुराज जायसवाल

ऋतुराज की इन अनूठी शैक्षणिक गतिविधियों का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह हुआ कि बच्चों की रुचि पढ़ाई में बढ़ी और उनकी उपस्थिति में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। बच्चे अब विद्यालय आने के लिए उत्साहित रहते हैं और सीखने की प्रक्रिया को बोझिल न समझकर आनंददायक मानने लगे हैं। इसके साथ ही, यह नवाचार विद्यार्थियों की समझदारी, तार्किक क्षमता और आत्मविश्वास को भी विकसित करने में सहायक बन रहा है।

ऋतुराज जायसवाल जैसे शिक्षकों का यह प्रयास यह साबित करता है कि यदि शिक्षण को नवाचार के साथ जोड़ा जाए, तो यह बच्चों की शिक्षा के स्तर को ऊँचाइयों तक पहुँचा सकता है। उनकी यह पहल शिक्षा जगत में एक प्रेरणादायक उदाहरण है और यह दर्शाती है कि सीखने की प्रक्रिया केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उसे रचनात्मक और अनुभवात्मक बनाना आवश्यक है।

नवाचार

राखी ठाकुर

बिहार के शिक्षकों में नवाचार की लहर तेजी से फैल रही है, और यह शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रांति ला रही है। इस दिशा में कई शिक्षक अनूठे प्रयास कर रहे हैं, लेकिन आज हम बात कर रहे हैं सीतामढ़ी जिले की एक समर्पित शिक्षिका, राखी ठाकुर की, जिन्होंने अपनी अनोखी शिक्षण पद्धति से हिंदी भाषा को बच्चों के लिए रोचक और सहज बना दिया है। उनके प्रयासों ने यह साबित कर दिया कि सही तरीके से पढ़ाया जाए तो हिंदी जैसे विषय में भी बच्चों की गहरी रुचि विकसित की जा सकती है।

राखी ठाकुर नानपुर प्रखंड के बेंगाही प्राथमिक विद्यालय में शिक्षिका के रूप में कार्यरत हैं। इस विद्यालय में छोटे-छोटे बच्चे पढ़ते हैं, जिनमें से कई को शुरू में पढ़ाई से विशेष रुचि नहीं थी। खासकर हिंदी भाषा को लेकर उनके मन में झिझक और डर था। वे कठिन शब्दों और व्याकरण से घबराते थे, जिससे उनकी सीखने की गति धीमी हो जाती थी। लेकिन राखी ठाकुर ने पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से हटकर एक नई और रचनात्मक विधि अपनाई, जिससे बच्चों के मन में हिंदी पढ़ने की जिज्ञासा और उत्साह बढ़ने लगा।

उन्होंने हिंदी पढ़ाने के लिए गतिविधि-आधारित शिक्षण पद्धति को अपनाया। उनकी एक अनोखी पहल थी कविता और कहानियों को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना। जब बच्चों को कविता को केवल शब्दों के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रदर्शन के रूप में देखने और अनुभव करने का अवसर मिला, तो उन्होंने इसे अधिक रुचि और उत्साह के साथ अपनाना शुरू कर दिया। कविता के भावों को समझाने के लिए उन्होंने बच्चों को अलग-अलग किरदार निभाने के लिए प्रेरित किया, जिससे वे न केवल शब्दों का अर्थ समझ सके बल्कि उसमें छिपे गहरे भावों को भी महसूस कर सके। उनकी यह विधि बेहद सफल साबित हुई।

बच्चे जो पहले हिंदी पढ़ने से कतराते थे, अब न केवल उसे आनंद लेकर पढ़ते हैं, बल्कि अपने दोस्तों और शिक्षकों के साथ मिलकर उस पर चर्चा भी करते हैं। उनकी समझ और अभिव्यक्ति दोनों में सुधार आया है। इससे विद्यालय में एक सकारात्मक वातावरण बना है, जहाँ बच्चे खेल-खेल में पढ़ाई कर रहे हैं और सीखने की प्रक्रिया को बोझ नहीं, बल्कि एक मजेदार गतिविधि के रूप में देख रहे हैं।

बिहार जैसे राज्य में, जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की अत्यधिक आवश्यकता है, राखी ठाकुर जैसी शिक्षिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। उनकी इस पहल ने यह संदेश दिया है कि यदि शिक्षक समर्पित हों और बच्चों की रुचि और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पढ़ाने की शैली विकसित करें, तो कोई भी विषय कठिन नहीं लगता और शिक्षा का स्तर ऊँचा उठ सकता है।

युवाओं को आकर्षित कर रहा गुरुजी बनना

विप्लव कुमार, विशिष्ट शिक्षक
मध्य विद्यालय अरिहाना
आजमनगर, कटिहार

शिक्षक किसी भी समाज की रीढ़ होते हैं। वे न केवल ज्ञान का संचार करते हैं, बल्कि नैतिकता, मूल्यों और अनुशासन की नींव भी रखते हैं। एक सशक्त समाज का निर्माण शिक्षकों के योगदान के बिना संभव नहीं है। इसलिए शिक्षकों को समाज में उचित सम्मान और प्रतिष्ठा मिलना अनिवार्य है।

शिक्षक विद्यार्थियों को न केवल शैक्षणिक ज्ञान देते हैं, बल्कि उन्हें नैतिकता, अनुशासन और जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। वे बच्चों को अच्छे नागरिक बनने की दिशा में भी मार्गदर्शन करते हैं।

एक शिक्षित और जागरूक समाज ही देश की प्रगति का आधार होता है। शिक्षक विद्यार्थियों को शिक्षा देकर समाज के भविष्य को आकार देते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा के स्रोत होते हैं। यदि उन्हें समाज में उचित सम्मान नहीं मिलेगा, तो यह भावी पीढ़ी के लिए नकारात्मक संदेश हो सकता है।

इसके अतिरिक्त जब शिक्षक का सम्मान किया जाता है, तो शिक्षा के क्षेत्र में योग्य और प्रतिभाशाली लोग आते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता भी बेहतर होती है।

इसका सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी है।यदि शिक्षक का सम्मान किया जाता है, तो समाज में शिक्षा का स्तर ऊँचा उठता है और लोग ज्ञान को अधिक महत्व देने लगते हैं।

शिक्षकों को उचित सम्मान मिले इसके लिए परम आवश्यक है कि शिक्षकों की मेहनत और योगदान को पहचानकर उन्हें उचित वेतन और सुविधाएँ दी जाएँ।विद्यार्थियों और अभिभावकों को शिक्षकों के प्रति सम्मान और आभार व्यक्त करने की संस्कृति विकसित की जानी चाहिए।विभिन्न मौकों पर जैसे

शिक्षक दिवस और अन्य अवसरों पर शिक्षकों को सम्मानित किया जाए।वहीं सरकार को भी शिक्षकों के हित में नीतियाँ बनानी चाहिए, जिससे वे अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन सुकून के साथ कर सकें।

प्रज्ञानिका आलेख

"एक आदर्श शिक्षक: मार्गदर्शक, प्रेरक और युग निर्माता"

शिक्षक केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक महान दायित्व है। एक शिक्षक समाज का शिल्पकार होता है, जो न केवल ज्ञान प्रदान करता है, बल्कि नैतिकता, संस्कार और जीवन मूल्यों की नींव भी रखता है। एक अच्छे शिक्षक की पहचान केवल उसकी विद्वत्ता से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार, दृष्टिकोण और छात्रों को प्रेरित करने की क्षमता से होती है। गुरु कुल की प्राचीन परंपरा से आधुनिक काल में भले ही गुरु शिष्य के ज्ञान आदान-प्रदान में बदलाव हुए हैं लेकिन एक शिक्षक का अपने विद्यार्थी, समाज और देश के लिए पथ-प्रदर्शक और भविष्य की बुनियाद खड़ा करने वाला होता है। और शिक्षक को इसीलिए भविष्य निर्माता भी कहा जाता है।

- एक शिक्षक को ज्ञान और शिक्षण कौशल में पारंगत होना चाहिए:

एक प्रभावशाली शिक्षक का पहला गुण उसका गहन ज्ञान और विषय पर पकड़ होती है। लेकिन केवल जानकारी देना पर्याप्त नहीं, उसे रोचक और व्यावहारिक तरीके से प्रस्तुत करना भी जरूरी है, जिससे विद्यार्थी सहजता से सीख सकें।

- एक शिक्षक को स्वयं अनुशासित और प्रेरणादायक व्यक्तित्व वाला होना चाहिए:

एक शिक्षक केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसकी वाणी, आचरण और कार्यशैली विद्यार्थियों को प्रेरणा देती है।

- एक शिक्षक को हमेशा धैर्य और संवेदनशीलता युक्त होना चाहिए:

हर छात्र की सीखने की क्षमता अलग होती है। एक अच्छा शिक्षक धैर्यपूर्वक प्रत्येक विद्यार्थी की जरूरतों को समझता है और उनकी क्षमताओं को निखारने का प्रयास करता है। वह केवल अंक आधारित शिक्षा नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है।

- एक शिक्षक को चरित्रवान,नैतिकता और मूल्यों का संवाहक होना चाहिए:

एक शिक्षक केवल किताबी ज्ञान नहीं देता, बल्कि नैतिकता, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी की शिक्षा भी देता है। वह अपने आचरण से विद्यार्थियों को अनुशासन, परिश्रम और कर्तव्यपरायणता का महत्व सिखाता है।

- एक शिक्षक को हमेशा स्नेह और सहयोग की भावना रखनी चाहिए:

एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों के प्रति मित्रवत व्यवहार रखना चाहिए, जिससे वे खुलकर अपनी शंकाएँ पूछ सकें। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास कराना नहीं, बल्कि एक सशक्त और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व विकसित करना होना चाहिए।

अपने जीवन काल के शिक्षक अनुभव से कह सकता हूं कि एक प्रभावशाली शिक्षक वही होता है जो विद्यार्थियों के मन में सीखने की जिज्ञासा और आत्मनिर्भरता की भावना पैदा करे। वह सिर्फ एक पेशेवर नहीं, बल्कि समाज का पथ प्रदर्शक होता है, जो नयी पीढ़ी को संस्कारित और जागरूक बनाकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देता है। ऐसा शिक्षक ही सच्चे अर्थों में "गुरु" कहलाने के योग्य होता है।

सुरेश कुमार गौरव, प्रधानाध्यापक
उ.म.वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

प्रज्ञानिका आलेख

रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता और उसका महत्त्व।

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने और न्याय पूर्ण समाज के विकास के साथ - साथ देश के विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता होती है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा वह शिक्षा है , जो छात्रों को शिक्षण संस्थाओं और बाजार में प्रासंगिक कौशल प्रदान करती है, जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त करने में मदद मिलती है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं होना चाहिए , बल्कि छात्रों की रोजगार के लिए तैयार करना भी होना चाहिए। शिक्षा का लक्ष्य केवल डिग्रियां देना नही होना चाहिए , बल्कि छात्रों को ऐसे कौशल सिखाना चाहिए, जो उन्हे रोजगार पाने में मदद करें।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता क्यों है?

देखा जाए तो कौशल विकास जमी रोजगार का रास्ता है। साथ ही हमें शिक्षा और प्रौद्योगिकी के बीच मजबूत संबंध स्थापित करना होगा।ताकि छात्रों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा मुहैया कराई जा सके। इसके अतिरिक्त सरकार को रोजगार आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बनानी चाहिए और विभिन्न कार्यक्रमों को शुरू करना चाहिए।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता इन बिंदुओं से समझी जा सकती है ।

- बढ़ती बेरोजगारी :- भारत में बेरोजगारी दर लगातार बढ़ रही है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करके इस समस्या का समाधान कर सकती है।
- कौशल का अभाव :- भारतीय शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से सैद्धांतिक ज्ञान पर केंद्रित है, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों में व्यावहारिक कौशल का अभाव होता है। रोजगारोन्मुखी शिक्षा इस कमी को दूर कर सकती है।
- बदलता रोजगार का परिदृश्य :- आजकल रोजगार का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। नई प्रद्योगिकी का उदय और वैश्वीकरण ने कौशल की मांग में बदलाव ला दिया है। इस प्रकार के शिक्षा छात्रों को इन बदलावों के लिए तैयार कर सकती है।
- आर्थिक विकास :- कुशल कार्यबल किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। कुशल कार्यबल का निर्माण करके देश के आर्थिक विकास में योगदान दिया जा सकता है।
- ऽआत्मनिर्भरता :- रोजगारोन्मुखी शिक्षा युवाओं को आत्मनिर्भर बनाती है। जब युवा अपने पैरों पर खड़े होते हैं, तो वे समाज के लिए उपयोगी सदस्य बन जाते हैं

रोजगारोन्मुखी शिक्षा को बढ़ावा देने के उपाय एवं इनके लाभ

- शैक्षणिक संस्थानों में सुधार :- शैक्षणिक संस्थानों में रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों को अपनाना चाहिए।
- कौशल विकास कार्यक्रम :- सरकार को कौशल विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।
- उद्योगों के साथ सहयोग :- शैक्षणिक संस्थानों को उद्योगों के साथ सहयोग करना चाहिए।
- छात्रों को प्रेरित करना:- छात्रों को रोजगारोन्मुखी शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा के लाभ :-

- रोजगार के अवसर :- रोजगारोन्मुखी शिक्षा छात्रों को रोजगार के अवसर प्रदान करती है तथा छात्रों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने में सहायक है।
- .आर्थिक विकास :- रोजगारोन्मुखी शिक्षा देश के आर्थिक विकास में योगदान देती है।
- सामाजिक विकास :- रोजगारोन्मुखी शिक्षा सामाजिक विकास में योगदान देती है।

निष्कर्ष यह निकलता है कि भारतीय परिदृश्य में रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता अति महत्वपूर्ण है। ऐसी शिक्षा युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करके, देश के आर्थिक विकास में योगदान दे सकती है और सामाजिक समस्याओं के समाधान में अपनी महती भूमिका निभा सकती है

आशीष अम्बर
शिक्षक
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
प्रखंड - केवटी
जिला - दरभंगा
बिहार

बिहार में सरकारी विद्यालयों के डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने के लिए टीचर्स ऑफ बिहार ने 'प्रोजेक्ट शिक्षक साथी' की शुरुआत की है। इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत राज्य के सभी सरकारी विद्यालयों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा जाएगा, जिससे शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता, पारदर्शिता और संवाद में व्यापक सुधार होगा।

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

1👉 आधुनिक आवर्त सारणी में कितने आवर्त और समूह होते हैं?
Ans: 7 आवर्त और 18 समूह।
How many periods and groups are in the modern periodic table?
Ans: 7 periods and 18 groups.
2👉 सबसे हल्की धातु कौन सी है?
Ans: लिथियम।
Which is the lightest metal?
Ans: Lithium.
3👉 सीमेंट का मुख्य घटक क्या है?
Ans: SiO_2।
What is the main component of cement?
Ans: SiO_2.
4👉 द्रव्यमान और वेग का गुणनफल क्या कहलाता है?
Ans: संवेग।
What is the product of mass and velocity called?
Ans: Momentum.
5👉 थैलाफाइट समूह के पौधों को सामान्यतः क्या कहा जाता है?
Ans: शैवाल।
What are plants of the Thallophyte group commonly called?
Ans: Algae.
6👉 वाशिंग सोडा के एक अणु में जल के कितने अणु उपस्थित होते हैं?
Ans: 10।
How many water molecules are present in one molecule of washing soda?
Ans: 10.
7👉 गति का द्वितीय समीकरण क्या प्रदान करता है?
Ans: स्थिति और समय का संबंध।
What does the second equation of motion provide?
Ans: Relationship between position and time.
8👉 वस्तु की गति दुगनी होने पर गतिज ऊर्जा कितनी गुना होगी?
Ans: चार गुनी।
If an object's speed doubles, how much does its kinetic energy increase?
Ans: Four times.
9👉 भ्रूण को पोषण पहुंचाने वाला तंत्र क्या कहलाता है?
Ans: नाल।
What is the system that provides nutrition to the fetus called?
Ans: Placenta.
10👉 आधुनिक आवर्त सारणी में धातुओं, अधातुओं और उपधातुओं को कैसे व्यवस्थित किया गया है?
Ans: समूह और आवर्त के अनुसार।
How are metals, nonmetals, and metalloids arranged in the modern periodic table?
Ans: By groups and periods.

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

1. मछली को जल से बाहर निकालने पर वह क्यों मर जाती है

Ans: मछली जलीय प्राणी है यह गिल्स द्वारा श्वसन क्रिया करती है। गिल्स जल में घुली आक्सीजन को अवशोषित करके कार्बन डाई ऑक्साइड गैस बाहर निकालते है। मछली के थोड़ी देर के लिए जल से बाहर निकाल देने पर श्वसन क्रिया बंद हो जाती है अतः वह मर जाती है।

2. खटाई डालने पर दूध क्यों फट जाता है?

Ans: दूध में जल, वसा, कार्बोहाइड्रेट तथा अकार्बनिक लवण होते हैं। केसीन नामक फास्फो प्रोटीन भी उपस्थित होता है। जब कोई अम्ल या खटाई दूध में मिलाई जाती है तो यह वसा तथा केसीन आपस में मिलकर थक्का बना लेते है तथा पात्र की तली में बैठ जाते है। जल, कार्बोहाइड्रेड व लवण ऊपर तैरते रहते हैं इस क्रिया को हम दूध का फटना कहते हैं।

3. पक्षी हवा में क्यों उड़ पाते हैं?

Ans: पक्षियों में पंख होते हैं जो अग्रपाद के रूपांतरण होते हैं। इनकी हड्डियाँ खोखली तथा फेफड़ों में वायुकोष होते है जो शरीर को हल्का बनाते हैं। इस प्रकार शरीर के हल्केपन तथा पंखों की सहायता से पक्षी हवा में सरलता से उड़ पाते हैं।

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

4. समुद्र का पानी स्वाद में खारा क्यों लगता है?

Ans: समुद्र में नदियों का पानी आता है, जिसमे बहुत से लवण मिले होते हैं। गर्मी के कारण समुद्र का जल वाष्प में बदलता रहता है, परन्तु लवण समुद्र में ही रह जाते है। इस कारण समुद्र के पानी में सोडियम क्लोराइड अधिक मात्रा में घुला रहता है। इसी लवण की उपस्थिति के कारण समुद्र का पानी खारा लगता है।

5. नींबू, संतरा, टमाटर, इमली आदि स्वाद में खट्टे क्यों होते हैं?

Ans: नींबू, संतरा, टमाटर, इमली की कोशिकाओं की रिक्तिकाओं में धुलित अवस्था में साइट्रिक अम्ल, टार्टरिक अम्ल व ऑक्सेलिक अम्ल का संग्रह होता है। अतः इनमें स्थित इन रासायनिक पदार्थो के कारण ही नींबू, संतरा, टमाटर, इमली का स्वाद खट्टा होता है।

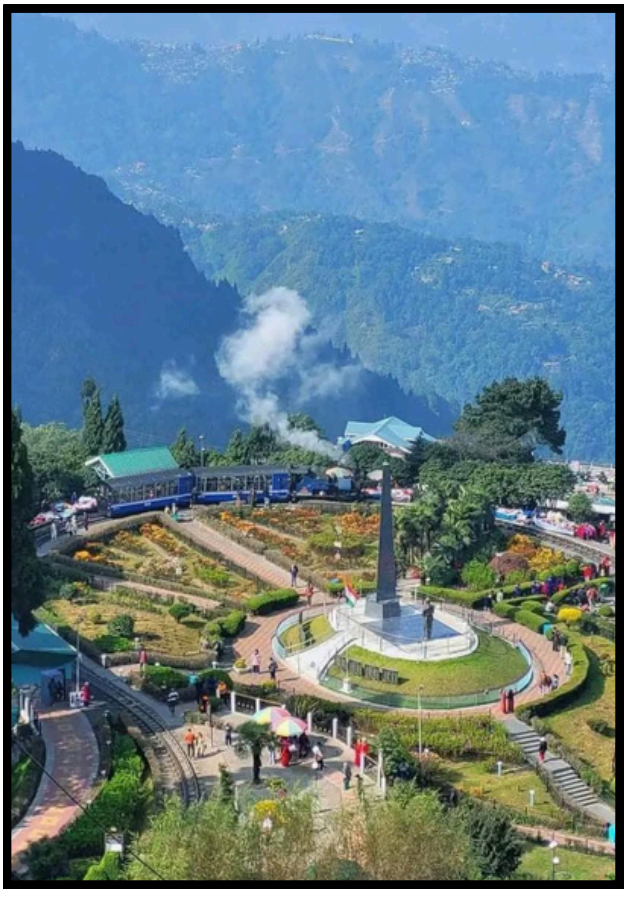

6. ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कमी होती है फिर भी पहाड़ों पर रहने वाले व्यक्ति बड़ी सक्रियता से अपने जीवन की गतिविधियाँ कैसे कर लेते हैं?

Ans: अधिक ऊँचाई पर ऑक्सीजन की कमी होती है फिर भी ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों के निवासी बड़ी सक्रियता से जीवन की गतिविधियाँ कर लेते हैं क्योंकि ऐसे क्षेत्र के निवासी अधिक ऊँचाई के प्रति अनुकूलित हो जाते है।इनकी वक्षगुहा का आयतन अधिक होता है जिससे इनके फेफड़ों के वायुकोषों का सतही क्षेत्र अधिक हो जाता है। इनके रुधिर में लाल रुधिर कणिकाओं की संख्या अधिक होती है तथा ऊतकों के मध्य अपेक्षाकृत अधिक सघन कोशिका जाल होता है। परिश्रम करने से उनकी पेशियों में कम केशिका किण्वन होता है और नाइट्रिक एसिड की मात्रा कम बनती है अतः इन्हें श्रम से होने वाली थकान को दूर करने के लिये कम ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है।

भारतीय सेना ने बांस आधारित बंकर विकसित करने के लिए किस IIT के साथ साझेदारी की है? / Indian Army has partnered with which IIT to develop a bamboo-based bunker?

A. IIT बॉम्बे / IIT Bombay

B. IIT मद्रास / IIT Madras

C. IIT गुवाहाटी / IIT Guwahati ✅

D. IIT हैदराबाद / IIT Hyderabad

व्याख्या: भारतीय सेना ने IIT गुवाहाटी के साथ मिलकर बांस से बने बंकर विकसित करने की पहल की है। / The Indian Army has collaborated with IIT Guwahati to develop bamboo-based bunkers.

दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता कौन सा देश बन गया है? / Which country has become the world's second-largest mobile manufacturer?

A. जापान / Japan

B. चीन / China

C. भारत / India ✅

D. दक्षिण कोरिया / South Korea

व्याख्या: भारत अब चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता बन गया है। / India has become the world's second-largest mobile manufacturer after China.

श्रीलंका ने अपना 77वां राष्ट्रीय दिवस कब मनाया? / On which date did Sri Lanka celebrate its 77th National Day?

A. 01 फरवरी / 01 February

B. 02 फरवरी / 02 February

C. 03 फरवरी / 03 February

D. 04 फरवरी / 04 February ✅

व्याख्या: श्रीलंका ने 04 फरवरी 2025 को अपना 77वां राष्ट्रीय दिवस मनाया। / Sri Lanka celebrated its 77th National Day on February 4, 2025.

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

गुजरात सरकार ने समान नागरिक संहिता का मसौदा तैयार करने के लिए कितने सदस्यीय समिति बनाई? / How many members are in the Gujarat committee for the Uniform Civil Code draft?

A. दो / Two

B. तीन / Three

C. चार / Four

D. पाँच / Five ✅

व्याख्या: गुजरात सरकार ने 5 सदस्यीय समिति का गठन किया है जो समान नागरिक संहिता का मसौदा तैयार करेगी। / Gujarat has formed a 5-member committee to draft a Uniform Civil Code.

नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन किसने किया? / Who inaugurated the World Book Fair in New Delhi?

A. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू / President Droupadi Murmu ✅

B. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी / PM Narendra Modi

C. गृहमंत्री अमित शाह / Home Minister Amit Shah

D. रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह / Defence Minister Rajnath Singh

व्याख्या: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। / President Droupadi Murmu inaugurated the World Book Fair in New Delhi.

भारत का पहला AI विश्वविद्यालय कहाँ स्थापित होगा? / Where will India's first AI University be established?

A. गुजरात / Gujarat

B. महाराष्ट्र / Maharashtra ✅

C. नई दिल्ली / New Delhi

D. केरल / Kerala

व्याख्या: महाराष्ट्र में भारत का पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विश्वविद्यालय स्थापित किया जाएगा।

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

1 Australia ने सख्त घृणा-अपराध कानून पारित किया।
Australia passed a strict anti-hate crime law.

2 विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2025 का आयोजन उत्तर प्रदेश के गोंडा में हुआ।
World Wetlands Day 2025 was celebrated in Gonda, Uttar Pradesh.

3 भारत में स्तन कैंसर के सबसे अधिक मामले हैदराबाद में दर्ज हुए।
Hyderabad recorded the highest number of breast cancer cases in India.

4 अमेरिका ने महिला खेलों में ट्रांसजेंडर एथलीटों पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पारित किया।
USA passed a bill banning transgender athletes in women's sports.

5 रूस ने बेलारूस में नई बैलिस्टिक मिसाइल प्रणाली तैनात करने का निर्णय लिया।
Russia decided to deploy a new ballistic missile system in Belarus.

6 भारत सरकार ने 'पिनाका रॉकेट प्रणाली' के लिए ₹10,000 करोड़ से अधिक के अनुबंध किए।
The Indian government signed ₹10,000+ crore contracts for the Pinaka Rocket System.

7 अंतर्राष्ट्रीय चर्म एक्सपो 2025 नई दिल्ली में आयोजित होगा।
International Leather Expo 2025 will be held in New Delhi.

8 उत्तर प्रदेश सरकार ने 2025-26 के लिए नई आबकारी नीति को मंजूरी दी।
UP government approved the new excise policy for 2025-26.

9 फरीदाबाद में 38वां अंतरराष्ट्रीय सूरजकुंड शिल्प मेला आयोजित हुआ।
The 38th International Surajkund Crafts Fair was held in Faridabad.

10 IBCA सात बड़ी बिल्ली प्रजातियों के संरक्षण पर केंद्रित है।
IBCA focuses on the conservation of seven big cat species.

11 ऑस्ट्रेलिया ने कुशल श्रमिकों के लिए नई वीज़ा नीति लागू की।
Australia introduced a new visa policy for skilled workers.

12 ICC महिला T20 वर्ल्ड कप 2026 का फाइनल अहमदाबाद में होगा।
ICC Women's T20 World Cup 2026 final will be held in Ahmedabad.

13 भारतीय टेनिस खिलाड़ी कर्मन कौर थांडी ने ITF महिला टेनिस टूर्नामेंट 2025 जीता।
Indian tennis player Karman Kaur Thandi won the ITF Women's Tennis Tournament 2025.

14 घाना बच्चों के लिए दुनिया का पहला मलेरिया वैक्सीन मंजूर करने वाला पहला देश बना।
Ghana became the first country to approve the malaria vaccine for children.

Q. रणथ्भोर राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Ranthambhore National Park located?
Ans: राजस्थान | Rajasthan
Q. सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Sariska National Park located?
Ans: राजस्थान | Rajasthan
Q. घना पक्षी राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Ghna Bird National Park located?
Ans: राजस्थान | Rajasthan
Q. कान्हा राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Kanha National Park located?
Ans: मध्य प्रदेश | Madhya Pradesh
Q. पेंच राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Pench National Park located?
Ans: मध्य प्रदेश | Madhya Pradesh
Q. नामदफा राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Namdapha National Park located?
Ans: अरुणाचल प्रदेश | Arunachal Pradesh
Q. सुलतानपुर राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Sultanpur National Park located?
Ans: हरियाणा | Haryana
Q. कलेशर राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Kalesar National Park located?
Ans: हरियाणा | Haryana
Q. दुधवा राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Dudhwa National Park located?
Ans: उत्तर प्रदेश | Uttar Pradesh
Q. बेतला राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Betla National Park located?
Ans: झारखंड | Jharkhand
Q. सिरोही राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Sirohi National Park located?
Ans: मणिपुर | Manipur
Q. खांचनजोंगा राष्ट्रीय पार्क भारत के किस राज्य में स्थित है / In which state of India is the Khangchendzonga National Park located?
Ans: सिक्किम | Sikkim

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

प्रमुख देशों के राष्ट्रीय चिह्न (Major Countries National Symbols)

1. भारत (India) - अशोक चिन्ह (Ashoka Emblem)
2. तुर्की (Turkey) - चाँद-तारा (Crescent Star)
3. डेनमार्क (Denmark) - समुद्री तट (Seacoast)
4. नॉर्वे (Norway) - शेर (Lion)
5. बांग्लादेश (Bangladesh) - वाटर लिली (Water Lily)
6. फ्रांस (France) - लिली (Lily)
7. नीदरलैंड्स (Netherlands) - शेर (Lion)
8. ईरान (Iran) - गुलाब का फूल (Rose)
9. यू.के. (UK) - गुलाब का फूल (Rose)
10. स्पेन (Spain) - ईगल (Eagle)
11. यू.एस.ए (USA) - गोल्डन रॉड (Goldenrod)
12. जापान (Japan) - गुलदाउदी (Chrysanthemum)
13. इटली (Italy) - सफेद लिली (White Lily)
14. कनाडा (Canada) - मेपल लीफ (Maple Leaf)
15. ऑस्ट्रेलिया (Australia) - वॉटल (Wattle)
16. रूस (Russia) - डबल हेडेड ईगल (Double-Headed Eagle)
17. न्यूज़ीलैंड (New Zealand) - कीवी, सदर्न क्रॉस, फर्न (Kiwi, Southern Cross, Fern)

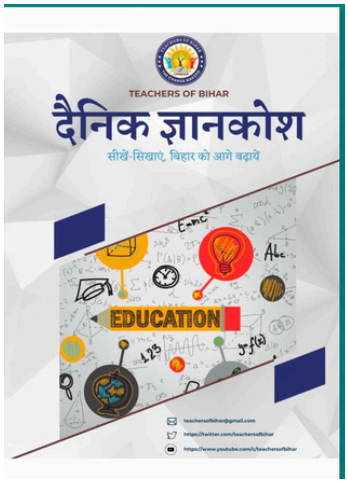

टीचर्स ऑफ बिहार* द्वारा प्रकाशित *"दैनिक ज्ञानकोश"* पत्रिका बिहार के शिक्षकों एवं छात्र/छात्राओं के शैक्षिक बेहतरी के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। इसमें सम्मिलित सामग्री शिक्षकों को उत्कृष्ट शिक्षण में मदद करती है और छात्र/छात्राओं के ज्ञान को व्यापक बनाती है। आइए, हम सब मिलकर इस अनूठे प्रयास का हिस्सा बनकर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा दें।_

ज्ञान पोटली

शशिधर उज्ज्वल, औरंगाबाद

✅ वर्धा आश्रम कहाँ स्थित है?
Answer: महाराष्ट्र में
✅गांधीजी ने साप्ताहिक हरिजन कब शुरू किया था?
Answer: 1933
✅गाँधी जी को अर्द्ध नग्न फ़क़ीर किस ने कहा?
Answer: विंस्टन चर्चिल
✅टैगोर को गुरुदेव का नाम किसने दिया?
Answer: महात्मा गाँधी ने
✅गाँधी जी को महात्मा किसने कहा?
Answer: टैगोर
✅गाँधी जी का राजनितिक गुरु कौन था?
Answer: गोपाल कृष्ण गोखले
✅गाँधी का अध्यात्मिक गुरु कौन है?
Answer: लियो टॉल्स्टॉय
✅गाँधी जी की हत्या कब हुई?
Answer: 30 जनवरी 1948 को नाथुराम विनायक गोडसे
✅गाँधी जी ने 'पोस्ट डेटेड चेक' किसे कहा ?
Answer: क्रिप्स मिशन (1942) को
✅गाँधी जी ने 'हिन्द स्वराज' का प्रकाशन कब किया ?
Answer: 1908 में
✅बाबा आम्टे को 'अभय सदक' 'Abhay Sadak का ख़िताब किसने दिया?
Answer: महात्मा गाँधी
✅भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में किस अवधि को 'गांधी युग' के रूप में माना जाता है?
Answer: 1915 - 1948
✅भारत में गांधी जी का तीसरा सत्याग्रह कहाँ था?
Answer: खेड़ा सत्याग्रह
✅सत्याग्रह सभा की स्थापना किसने की थी?
Answer: महात्मा गाँधी ने
✅महादेव देसाई के हस्तान्तरण के बाद गाँधी जी का सचिव किसे बनाया गया था?
Answer: प्यारेलाल
✅गाँधी जी की अनुयायी मीरा बहन का वास्तविक नाम क्या था?
Answer: मेडेलीन स्लेड
✅किस ने गांधी के दांडी मार्च की तुलना श्री राम की लंका पौराणिक यात्रा से की थी?
Answer: मोतीलाल नेहरू

SWAYAM (स्वयं)

शिक्षकों और छात्रों के लिए निःशुल्क ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म स्वयं भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा विकसित एक निःशुल्क ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म है। यह शिक्षकों, छात्रों और शिक्षार्थी के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

प्रमुख विशेषताएँ

✓ निःशुल्क NCERT और BSEB-अनुरूप पाठ्यक्रम कक्षा 9 से 12 तक के लिए उपलब्ध।

✓ शिक्षक प्रशिक्षण - शिक्षण विधियों, डिजिटल शिक्षण और विषय विशेषज्ञता पर कोर्स।

✓ प्रमाण पत्र (Certificate) कोर्स पूरा करने के बाद प्रमाण पत्र प्राप्त करें (कुछ पाठ्यक्रमों में परीक्षा के लिए मामूली शुल्क लग सकता है)।

✓ वीडियो व्याख्यान और अध्ययन सामग्री NCERT, NIOS, UGC, AICTE और अन्य संस्थानों द्वारा तैयार की गई।

SWAYAM का उपयोग कैसे करें?

1 वेबसाइट पर जाएं SWAYAM वेबसाइट खोलें।

2 पंजीकरण करें ईमेल या गूगल अकाउंट से साइन अप करें।

3 कोर्स खोजें बिहार बोर्ड के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम चुनें।

4 निःशुल्क नामांकन करें किसी भी कोर्स में शामिल हो और सीखना शुरू करें।

5 प्रमाण पत्र प्राप्त करें कोर्स पूरा करें और परीक्षा दें (यदि आवश्यक हो)।

SWAYAM ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

Google Play Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://swayam.gov.in/

ePathshala (ई पाठशाला)

NCERT द्वारा विकसित निःशुल्क डिजिटल शिक्षा ऐप ePathshala भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (MoE) और NCERT द्वारा विकसित एक निःशुल्क मोबाइल और वेब प्लेटफॉर्म है। यह बिहार बोर्ड (BSEB) के शिक्षकों और छात्रों के लिए NCERT पाठ्यपुस्तकों, ऑडियो-वीडियो संसाधनों और डिजिटल अध्ययन सामग्री का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

प्रमुख विशेषताएँ

✓ निःशुल्क NCERT पाठ्यपुस्तकें कक्षा 1 से 12 तक की किताबें पीडीएफ और फ्लिपबुक फॉर्मेट में उपलब्ध ।

✓ बहुभाषी संसाधन हिंदी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अध्ययन सामग्री।

✓ वीडियो और ऑडियो व्याख्यान शिक्षकों के लिए ई-कंटेंट और इंटरएक्टिव संसाधन ।

✓ शिक्षक मार्गदर्शिका (Teachers' Handbook) विभिन्न विषयों पर शिक्षण रणनीतियाँ।

✓ ऑफलाइन एक्सेस डाउनलोड करके कभी भी, कहीं भी पढ़ सकते हैं।

ePathshala का उपयोग कैसे करें?

1 ऐप डाउनलोड करें या वेबसाइट खोलें।

2 कक्षा (Class) और विषय (Subject) चुनें।

3 पाठ्यपुस्तकें, ऑडियो-वीडियो, शिक्षक गाइड एक्सेस करें।

4 ई-किताबें डाउनलोड करें और ऑफलाइन पढ़ें।

5 शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री और शिक्षण संसाधन देखें।

ePathshala ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म | Google Play Store | App Store

वेब प्लेटफॉर्म: https://epathshala.nic.in//

VidyaDaan (विद्यादान)

शिक्षकों के लिए निःशुल्क डिजिटल सामग्री योगदान मंच VidyaDaan भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (MOE) और NCERT द्वारा विकसित एक निःशुल्क डिजिटल शिक्षण सामग्री योगदान प्लेटफॉर्म है। यह DIKSHA प्लेटफॉर्म के माध्यम से कार्य करता है, जहाँ शिक्षक, विषय विशेषज्ञ और शिक्षण संस्थान ऑनलाइन पाठ्य सामग्री साझा कर सकते हैं और उपयोग कर सकते हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

✓ शिक्षण सामग्री साझा करें शिक्षक अपने नोट्स, पाठ्यक्रम, क्विज़ और डिजिटल संसाधन अपलोड कर सकते हैं।

✓ राज्य और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम आधारित सामग्री बिहार बोर्ड और NCERT के अनुरूप अध्ययन सामग्री उपलब्ध ।

✓ पाठ्यक्रम-वार और विषय-वार सामग्री गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी आदि विषयों के लिए सामग्री।

✓ ऑनलाइन शिक्षण संसाधन ई-पाठ्यपुस्तकें, ऑडियो-वीडियो, पीडीएफ और इंटरएक्टिव क्विज़ ।

✓ शिक्षकों को प्रमाण पत्र (Certificate) योगदान करने वाले शिक्षकों को सरकार दद्वारा मान्यता प्राप्त डिजिटल प्रमाण पत्र दिया जाता है।

VidyaDaan का उपयोग कैसे करें?

1 वेबसाइट खोलें या DIKSHA ऐप डाउनलोड करें।

2 Google अकाउंट या मोबाइल नंबर से साइन इन करें।

3 "Contribute" (योगदान) सेक्शन में जाएं और अपनी सामग्री अपलोड करें।

4 किसी भी राज्य या कक्षा के लिए पाठ्य सामग्री प्रदान करें।

5 स्वीकृति के बाद, आपकी सामग्री देशभर के शिक्षकों और छात्रों के लिए उपलब्ध होगी।

VidyaDaan ऐप डाउनलोड कैसे करें?

वेब प्लेटफॉर्म

वेब प्लेटफॉर्म:https://vdn.diksha.gov.in//

कला

पटना कलम

श्रद्धा झा
केशव दास कला
महाविद्यालय दरभंगा

पटना कलम भारतीय लघु चित्रकला की एका प्रसिद्ध शैली है जो मुख्य रूप से बिहार के पटना शहर में विकसित हुई। यह चित्रकला मुगल, राजस्थानी, और फारसी शैली से प्रभावित थी लेकिन इसमें स्थानीय तत्वों और विशिष्ट तकनीकों का समावेश किया गया है। पटना कलम को कंपनी शैली की चित्रकला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है क्योंकि यह ब्रिटिश शासन के दौरान विकसित हुई और अंग्रेजों द्वारा प्रायोजित की गई थी।

पटना कलम की उत्पति और विकास
पटना कलम की शुरुआत अठारहवीं शताब्दी के अंत और उन्नीसवीं वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई थी। यह शैली मुख्य रूप से मुगल चित्रकला की एक शाखा के रूप में उभरी लेकिन समय के साथ इसने अपनी विशिष्ट पहचान बना ली। पटना कलम के चित्रकार मुगल दरबार से जुड़े हुए थे लेकिन मुगल साम्राज्य के पतन के बाद उन्होंने स्थानीय व्यापारियों और ब्रिटिश अधिकारियों के लिए चित्र बनाना शुरू किया।

प्रमुख कलाकार

शिवलाल : पटना कलम के जाने माने कलाकार

हरिहर शमी: उन्होने आम जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपनी कला में उकेश

नकीम अली: जो यथार्थवादी चित्रण के लिए प्रसिद्ध थे

पटना कलम के प्रमुख विषय

बाजार और व्यापार के दृश्य-दुकानदार व्यापारी मजदूरों का जीवन
सामाजिक जीवन-शादी-ब्याह, त्योहार, नृत्य संगीत समारोह ।
ब्रिटिश अधिकारी और जैनिक - अंग्रेज अफसरों और उनकी दिनचर्या का चित्रण
राजा-महाराजाओं के दरबार - नवाबों और स्थानीय शासकों का जीवन ।
लोकजीवन - किसान, मछुआरे, कुम्हार, बुनकर आदि ।

पटना कलम

पटना कलम की प्रमुख विशेषताएँ यथार्थवादी चित्रण

! इस शैली में आम लोगों, बाजार त्योहार व्यापार और सामाजिक जीवन को सजीव रूप से चित्रित किया जाता था।

. इसमे कल्पनाशीलता की बजाय वास्तविक जीवन के दृश्यों को प्राथमिकता दी जाती थी।

2. पार्श्वभूमि अधिकतर चित्रों में बैकग्राउंड का अभाव होता था जिससे Background नहीं मुख्य चित्र पर अधिक ध्यान दिया जाता था।

3. . हल्के और पारदर्शी रंगों का प्रयोग इसमें प्रकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता था, जो हल्के और पारदर्शी होते थे

4. कागज, हाथीदांत और मखमल पर चित्रण पटना कलम के चित्र कागज, हाथीदांत. मखमल और कपड़ों पर बनाए जाते थे

वर्तमान स्थिति और संरक्षण

20 वीं शताब्दी में फोटोग्राफी और आधुनिक कलाओं के आने से इस शैली की लोकप्रियता घट गई।

बिहार सरकार और कला प्रेमियों द्वारा इसे पुनर्जीवित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

पटना संग्रहालय में इस कला के बेहतरीन नमूने संरक्षित हैं।

अपने पापा की प्यारी परी हूं।
जननी मां की राज दुलारी हूं।।
बड़े भैया की बहना न्यारी हूं।
बाबुल के अंगना की फूलवारी हूं ।।
मैं तो दो जहां की राजकुमारी हूं।
रूप अनेक पर मैं इक नारी हूं।।

अपने प्यारे बच्चों की मां रानी हूं ।
पिया ज़ी के दिल की धानी हूं।।
सास ससुर के बुढ़ापे की छड़ी हूं ।
परिवार को जोड़ने वाला कड़ी हूं।।
मैं तो दो जहां की राजकुमारी हूं।
रूप अनेक पर मैं इक नारी हूं।।

रणजीत कुशवाहा प्राथमिक कन्या विद्यालय
लक्ष्मीपुर(समस्तीपुर)

त्रिभुज के प्रकार – मनहरण धनाक्षरी

तीन सरल रेखाएं,
आपस में मिल जाएं,
घिरे हुए आकार को, त्रिभुज बताइए।
भुजा के आधार पर,
रूप के विचार पर,
तीन भिन्न प्रकार के, त्रिभुज बनाइए।
तीनों हो बराबर तो,
होता सम त्रिभुज वो,
समद्विबाहु होता जो, दो समान पाइए।
कोई जो समान नहीं,
विषमबाहु है वहीं,
तीनों हीं प्रकार यहाँ, भेद समझाइए।

राम किशोर पाठक
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज पटना।

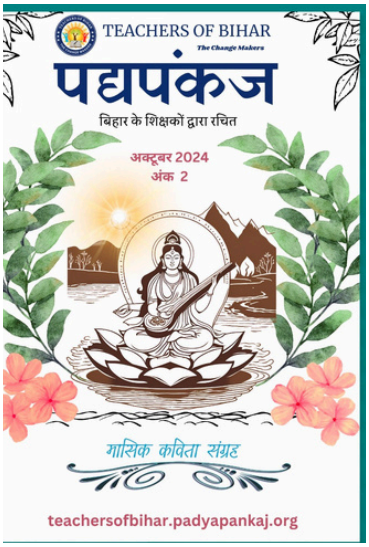

टीचर्स ऑफ बिहार की एक बेहतरीन प्रस्तुति पद्य पंकज। जिसमे आप सभी शिक्षक अपने मन की मोतियों को पिरोकर साहित्यिक माला स्वयं निर्मित कर सकतें हैं। जरूर पढ़िए पद्य पंकज शिक्षकों की एक से बढ़ कर एक रचनाएँ।

गिरीन्द्र मोहन झा
भगीरथ उच्च विद्यालय चैनपुर पड़री सहरसा

पुत्री

धन्य वह गेह है, जहँ खिलखिलाती बेटियाँ,
धन्य वह गेह है, जहाँ चहचहाती हैं बेटियाँ,

धर्म-ग्रंथ कहते हैं, गृह-लक्ष्मी होती बहू-बेटियाँ,
सारे देवों का वास वहाँ, जहाँ सम्मानित हैं बेटियाँ,

बेटी निज क्रिया-चरित्र से करती दो कुलों को रौशन,
गिरि-शिखर, अम्बर को भी छूने में कम नहीं हैं बेटियाँ,

आत्मा में लिंग का भेद कहाँ,
पुत्र-सुता होते हैं एक समान,

दोनों की एक ही होती क्षमता,
दोनों बढ़ाते हैं कुल का मान,

किन्तु अवसर जब भी मिले,
मिले दोनों को एक समान,

अवसर जब भी मिलता है,
कुछ भी कर गुजरती बेटियाँ ,

पर ईश्वर ने स्त्रियों को ही,
करुणा-ममता का दिया वर,

इनके कोख से ही होता है,
महापुरुषों का जन्म भूमि पर,

बड़े-बड़े वीर लाल उत्पन्न कर,
भूमि को कृत्य करती बेटियाँ ।

.

मधु कुमारी
कटिहार

उठो बेटियों अब तुम जागो
ना बेचारी, ना लाचार बनो
रूदन ना करो, करो घोर चीत्कार
दुराचारियों का अब स्वयं संहार करो.....

बनो दुर्गा, बनो चंडी और
काली का रौद्र अवतार धरो
छोड़ो श्रृंगार, उठाओ शस्त्र
वहशी दरिंदों का तुम रक्त करो.....

ना सीता, ना द्रौपदी बन
तुम पद्मिनी-सी साहसी महान बनो
सीता बन तुम ना दो नित अग्निपरीक्षा
ना घुट-घुट कर तुम नित विषपान करो.....

ना कोमल बनो और ना चांद, पर
सूरज-सी धधकती ज्वाला कुंड बनो
उठाओ कटार और दोहराओ इतिहास
"झांसी की रानी" सा हुंकार भरो.....

ना कृष्ण पर रहो निर्भर
कि कृष्ण नहीं अब आएंगे
ना कमज़ोर, ना लाचार बनो
स्वयं होकर सशक्त, ना हो निर्वस्त्र
जिस्म के भूखे राक्षसों को तू कर त्रस्त
कि "दुर्योधन-दुःशासन" का तुम स्वयं संहार करो....

उठो बेटियों अब तुम जागो
ना बेचारी, ना लाचार बनो।

लघु कथा

चार दिन की चाँदनी

मनु कुमारी, विशिष्ट शिक्षिका,
मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी पूर्णियाँ, बिहार

आज कुलो बाबू के यहाँ काफी चहल पहल थी । पूरे घर से लेकर दरवाजे तक शामियाने लगाये जा रहे थे । घर फूलों के बुके से सजाए जा रहे थे । एक ओर महिलाएँ पूजा की सामग्री जुटा रही थीं। बच्चे नये - नये वस्त्र पहनकर खेल रहे थे। कारण आज कुलो बाबू के यहाँ गृहप्रवेश का भोज था एवं उसी अवसर पर सत्यनारायण भगवान की पूजा रखी गयी थी। गाँव के भोज का मजा ही कुछ और होता है। कुलो बाबू के यहाँ से एक आदमी पूरे गाँव जाकर निमंत्रण दे दिया । पाहून परक, स्त्रीगण पुरूख, बाल बच्चा,सबजना निमंत्रण। रात में सभी भोज खाने आए । बहुत प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बने थे । लोग खाते और कुलो बाबू की बड़ाई भी कर रहे थे । बीच - बीच में कुलो बाबू स्वयं आकर - खाना कैसा बना ?पूछ लेते और खाना की प्रसंशा सुनकर खुश होते। बहुत किस्मत से आज उन्हें यह दिन देखने को मिला था। तभी मदन बाबू बोले - हौ भैया आब तोहर दुख के दिन चैल गेलऽ । तीन मंजिला मकान, पाँच मोटर कार, ट्रैक्टर, जगह जमीन सब चीज भऽ गेलऽ । आब आराम से तू पान खईहऽ दलान पर बैस कऽ तास खेलिहऽ । कहावत छै जे कमबै लागल पूत ते भागय लागल दुख । कुलो बाबू ने कहा हम नै बुझलियै भैया भगवान एते जल्दी हमरा तरफ ताकथिन । दूनू बेटी के बियाह क कऽ गंगा सेहो नहा लेलौं । दुनु बेटा के बियाह से भऽ गेल । आब हमरा और अरूण - बरूण के माय के कोनो टेंशन नै । आब हमर पांचों आंगुर घी में अछि । अरूण - बरूण भी हीरो के तरह सूटबूट लगाकर गाँव वालों को प्रणाम कर रहा था । दोनों भाई को दिल्ली गए पांच साल हीं हुए थे । पांच साल में इतना कमा लिया कि अब पूरे गाँव में सबसे अमीर हो गये । कुलो बाबू अपने दोनों बेटों को गर्व से देखते । दस साल पहले उनके घर की हालत ऐसी थी कि चावल, दाल, सब्जी ही खा पाते अधिकतर दिनों में सब्जी के जगह बारी - झारी के साग से हीं काम चल जाता था। कुलो बाबू को वैसे पांच बीघा जमीन थी तीन भाइयों में।पति पत्नी चार बच्चे उसमें शादी करने के लिए दो बेटियाँ।संयुक्त परिवार में होने के कारण कभी कभी दिक्कत का सामना भी करना पड़ता है ।सब किसी प्रकार आपस में मिलजुल कर रह रहे थे । अरूण और बरुण कभी कभी घर का ही धान छुपाकर बेच लेता और दोनों भाई अपनी मनपसंद चीजें खा लेता, थोड़ा बहुत घर भी ले आता और पिता के पूछने पर कहता जो फल्ला काका के यहाँ हमको दिया है। कोई कुछ काम करने को कहता तो बोलता ठीक है हम इतना रुपया लेंगे। फिर पैसा होने पर दोस्तों के साथ खाता- पीता एन्जॉय करता । बहुत गरीबी थी इसी बीच कुलो बाबू ने अपनी बड़ी बेटी की शादी की । अरूण बरूण ने कहा कि पापा हमलोग बड़े होकर बहुत पैसा कमायेंगे किसी चीज की कमी नहीं रहेगी। थोड़ा बड़ा होने दीजिये हमलोगों को । तब जाकर वर्षों बाद आज सुख का दिन देखकर कुलो बाबू फूले नहीं समा रहे थे ।

अभी गृहप्रवेश को हुए आज दस दिन हीं पूरे हुए थे कि फिर गाँव में चारों ओर हो, हल्ला सुनाई पड़ रहा था कुछ औरतों के रोने की आवाज सुनाई पड़ रही थी । मदन बाबू भी दौड़कर देखने गए कि आखिर क्या बात है। वहाँ पहुंचकर देखा तो मदन बाबू को ऐसा लगा कि काटो तो खून नहीं। पुलिस पकड़ कर कुलो बाबू और उसके दोनों बेटे अरूण -बरूण को ले जा रही थी । कई महीनों से दिल्ली पुलिस को दोनों भाईयों की तलाश थी ।दोनों पर बहुत हीं गंभीर आरोप थे। ये क्या हो गया मदन बाबू सोच में पड गये ।

लघु कथा

शैक्षणिक परिभ्रमण

डॉ० अजय कुमार मीत
उत्क्रमित मध्य विद्यालय चाँपी कोढ़ा,
कटिहार (बिहार)

मोम,,,,,, मोम,,,,,ये गौरैया क्या होती है?

सरिता अपने बेटे के इस प्रश्न को सुनते ही अतीत में खो गई।

जब वह अपने गांव वाले घर में रहती थी।बड़ा सा आंगन, दरवाजे पर भी कम से सौ लोगों के एक साथ बैठने की जगह। दरवाजे के ठीक बगल में बड़ी सी फूस की बैठकी।जहाँ गाँव के बड़े-बुजुर्ग के साथ बच्चे भी गपशप करते।काका सबको चाय-नाश्ता पूछते और कराते भी।

फूस की बैठकी के ऊपरी हिस्से में गौरैया क ढ़ेरों घोंसले। उसकी नींद तो उन्हीं की चूं-चूं की आवाज से खुलती थी।गाँव में गौरैया को तब लोग फूदकी कहते थे। उसके लगातार फूदक - फूदक कर चलने के कारण। कोई उसे बगड़ो चिड़िया भी कहता था।

मो,,,,,,,म,,, मैंने आपसे कुछ पूछा है,बताओ न, गौरैया किसे कहते हैं?

अचानक से वह अतीत से वापस वर्तमान में लौटी। उसने बेटे को बताया कि,यह एक चिड़िया का नाम है।जो हर जगह पायी जाती है। घरों में घोंसला बनाना पसंद करती है।
लेकिन अपने घर में तो गौरैया का एक भी घोंसला नहीं है?

वह अपने बेवकूफी पर शर्म आई।उसे ध्यान आया कि उसका बेटा कभी गांव गया ही नहीं है। जबकि वह पिछले दस साल से शहर के भीड़भाड़ वाले इलाके में रहती है।

मोम,,,,,, गौरैया यदि चिड़िया है तो चिड़िया घर में भी कहाँ दिखी?

इस बार के प्रश्न से परेशान सरिता ने बेटे को सिर्फ इतना ही कहा कि,कल हम अपने दादी घर चलते हैं और वहाँ तुम्हें गौरैया से मिलाते हैं।

दूसरे दिन दोनों माँ- बेटे गाँव अपने दादी घर के सफ़र में थे।

लघु कथा

भूख

निधि चौधरी
NPS SUHAGI

लॉक डाउन को कई हफ्ते हो चुके थे। जो भी हाथ में चिल्लर थें वह भी खत्म हो गए। अब बुधुआ सोच में पड़ गया कि क्या करे दो दिन हो गए खाना खाए हुए। भूख लग रहा था मानो अब जान ही ले लेगी। क्या करे घर भी तो दूर है 24 घण्टे तो लगेंगे आज ट्रेन पकड़ी तो। मग़र ट्रेनें भी तो बन्द है।

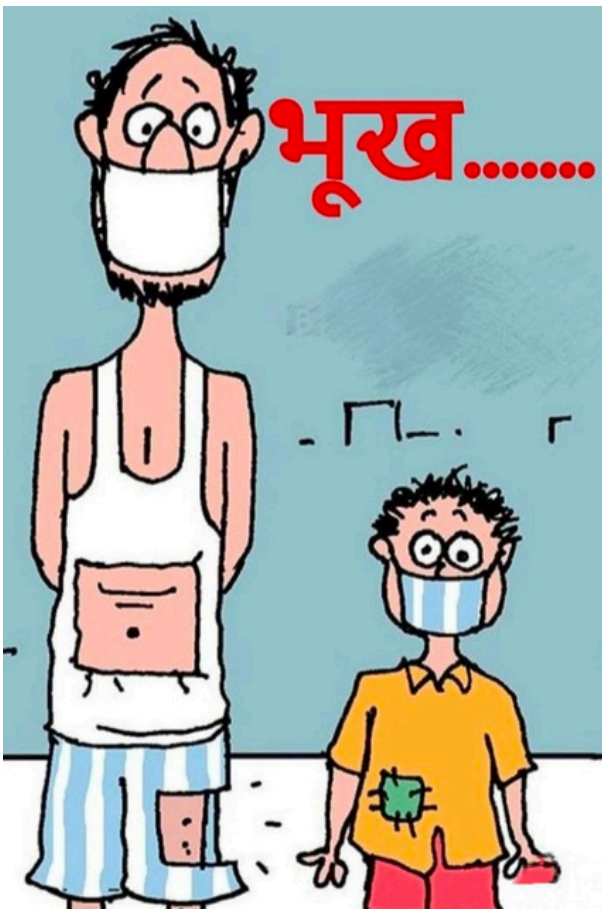

यही सोचते हुए बुधुआ बाहर निकलता है जिस सड़क पर सिंहो के दहाड़ने से भी अधिक ट्रैफिक का शोरगुल भयावह होता था, वहां आज एक घुप्प सन्नाटा था। लेकिन सड़क पर आती जाती पुलिस की गाड़ियों और एम्बुलेंस के सायरनों से कलेजा मुहँ को आ रहा था। धीरे धीरे बुधुआ आगे बढ़ रहा था कि कुछ खाने का या घर जाने जुगाड़ का ही जुगाड़ हो जाए।

तभी एक पुलिस वाले की नज़र बुधुआ पर पड़ती है।

पुलिस वाला - कहाँ निकले हो पता नही तुमको कि बाहर निकलना मना है।

बुधुआ हड़बड़ा जाता है और सुखी हुई जबान से कुछ बोल नहीं पाता। तब ही एक पुलिसवाले ने एक हंटर दे मारा उसके पीठ पर।

नहीं साहब ,,,,,न,,,नही साहब अब नहीं निकलेंगे माफी देय दो साहेब....

पुलिस वाला - कहाँ से हो.....,?

साहब गाँव से आया हूँ यहीं पहाड़गंज के होटल में काम करता हूँ नहीं नही साहब काम करता था अब तो नोकरी भी नहीं रहा।

फिर एक पुलिस वाला उसे पानी की एक बोतल देता है। और कहता है बाहर मत निकलो बाहर निकलना मना है।

पुलिस को देख कर न जाने क्यों बुधुआ जैसे लोग अकारण ही घबरा जातें हैं इसलिए तो दूर खड़ा छोटन छुप कर यह सब देख रहा था। जैसे ही पुलिसवाले आगे बढ़ते है वह भाग कर बुधुआ के पास आता है फुटपाथ पर बैठे बुधुआ से कहता है घर चला जा अब यहाँ कोई काम नही मिलने वाला। छोटन वही था जो बुधुआ को दिल्ली ले कर आया था और एक होटल में साफ सफाई का काम दिलवा दिया। छोटन कहता है देख बुधुआ तेरी हालत पर मुझे बहुत अफसोस है लेकिन मैं क्या करूँ मेरी भी ऐसी ही हालत है। छोटन मेरे भाई बस इतना एहसान कर दे कि मैं किसी तरह गाँव चला जाऊं।

छोटन - लेकिन अभी ट्रेनें भी बन्द है दो दिन बाद एक इस्पेशल ट्रेन चलेगी तू उसमे ही चला जाना। ले ये रख चालीस रुपये। मेरी भी ऐसी ही हालत है क्या करूँ इससे ज्यादा मदद नहीं कर सकता।

चल थोड़ी दूर पर खाना बंट रहा है। हम वही से खाना खा कर आ रहे हैं।

एक स्वयं सेवी संस्था द्वारा कुछ फ़ूड पैकेट्स दिए जा रहे थे पर जब तक बुधुआ और छोटन वहां पहुंचते है खाना खत्म हो चुका होता है।

लेकिन तब ही एक लड़की आवाज़ लगाती है रुको यह थोड़ी सी खिचड़ी बची है ले जाओ,,,,,।

बुधुआ की आँखों मे आंसू आ गये। पैकेट खोल कर वही खड़े खड़े ही खाने लगा। पेट भरा तो नहीं मग़र थोड़ी सी राहत मिली। पानी पी कर वापस लौटा।

दो दिन बाद स्टेशन में,,,,,

पांच घण्टे इंतज़ार के बाद ट्रेन आ जाती है।

किसी तरह बुधुआ अंदर चढ़ता है ट्रेन चल पड़ी है....श्रमिकों से खचाखच भरी है ट्रेन।

अब ट्रेन में बैठ कर राहत की सांस ली बुधुआ ने। पसीने से शर्ट भीग चुकी है। गला मानो रेगिस्तान बना है,,,,,। तभी ट्रेन में पानी वाला - पानी बोतल....पानी बोतल.....

अरे ! भूख और प्यास की तो याद ही नहीं रही। सहसा गला सूखने की अनुभूति हुई। अब बुधुआ जैसे लोगों को पानी खरीद कर पीने की जरूरत कहाँ होती है। वाश बेसिन के पास गया नल से हाथ लगा कर पानी से गला तर किया। जब प्यास तेज होती है तो पानी भी महबूबा नज़र आती है। इस दौरान यह भी होश न रहा कि बुधुआ पानी पीते हुए पसीने से भीगी हुई शर्ट और गीली हो गई। खिड़की से आ रही हवा में गीली शर्ट और पसीना दोनो सुखा दिया है।

ट्रेन के इस सामान्य श्रेणी के डब्बे में अधिकतर बुधुआ जैसे ही लोग तो बैठते हैं अब। शाम हो चली थी,,,,, लेकिन घर जाने की खुशी से पेट कहाँ मानता है साहब, उसे तो भूख लगती ही है। जब आस पास के यात्रियों ने खाने के डब्बे खोले तो खाने के सुगंध ने जैसे भूख और बढ़ा दी।

इतनी में चने वाला आता है। बुधुआ उसे रोकता है और जेब टटोलता है बीस रुपये ही बचे थे। एक बार तो विचार आया कि दस के चने ले लेता हूँ। पर फिर खयाल आया बिटिया ने आते वक्त तुतलाती जुबान में कहा था बाबा मेले लिए टोकलेट लाना। और बुधुआ ने गोद मे उठा कर कहा था हम अपनी बिटिया के लिए, चॉकलेट भी लाएंगे और नए कपड़े भी। बिटिया को याद करके एक छोटी सी मुस्कान आ गई चेहरे पर।

इतने में चने वाला ज़ोर से टोकता है ए भाई कहाँ खो गया,,,? चने दूँ क्या?

बुधुआ - माफ करना भाई नहीं चाहिए।

चने वाला - अरे नहीं लेना तो रोकता काहे है खाली पीली टाइम खोटी कर दिया।

पेट पकड़े हुए थका हारा न जाने कब उसकी आँख लग गई।

सुबह सूरज की रौशनी आँखों में पड़ने से नींद खुलती है। अब कुछ ही स्टेशन बचे थे कुछ ही देर में वो भी पीछे छूट गए।

दिन के बारह बज गए है चिलचिलाती धूप मानो आग बरस रही हो... बुधुआ का स्टेशन आ गया।

अपना स्टेशन न जाने क्यों आज थोड़ी देर ठहर के स्टेशन को निहारने का मन हुआ। धीरे धीरे आगे बढ़ा लेकिन आज सीढ़िया पार करने की हिम्मत भी न थी। फिर पत्नी और बिटिया का खयाल आया। आज जरूर मेरे लिए सबिता ने कुछ खास बनाएगी। बस स्टेशन से कुछ ही दूरी पर तो है उसका घर। हिम्मत जुटा कर कांपते हुए पैरों से सीढियां चढ़ने लगा। बस और कुछ सीढियां तो है बुधुआ चल तू अपनी मंजिल तक आ गया। वह सोचता है काश बीस रुपये के स्थान पर दो सौ रुपये होते तो बिटिया के लिए कपड़े भी ले लेता। और फिर काँपते हुए टांगो ने सीढ़ियों को पार कर ही लिया।

लेकिन सीढियां पार करने में इतना कष्ट कभी नहीं हुआ और सीढियां पार कर लेने के बाद इतनी खुशी भी कभी नही हुई।

स्टेशन से बाहर आते ही ये क्या दिन में ही अंधेरा छाने लगा, अरे ये धरती घूमती हुई क्यों लग रही है कहीं फिर से भूकम्प तो नहीं आ रहा... और फिर बुधुआ निढाल हो कर ज़मीन पर गिर पड़ता है। और ऐसा गिरा कि दुनियां से ही उठ गया। जेब मे बीस रुपये पड़े हैं। आस पास के जाने पहचाने लोग भी कोरोना के शक से उसके पास तक नहीं आतें। घण्टो बाद पुलिस और एम्बुलेंस आती है..... सारी प्रक्रिया के बाद, बुधुआ का पार्थिव शरीर घर आता है पत्नी दहाड़े मार कर रोने लगती है..... बिटिया इन सब से अनजानी माँ को रोते हुए देख घबराए हुए खामोश खड़ी है। किसी ने पूछा क्या हुआ भाई कोरोना था क्या.....?

तभी बिटिया तुतलाते हुए कहती है नहीं नहीं मेला बाबा भूख से मल गया.....।

लघु कथा

दाम्पत्य जीवन

नारायण झा
विद्यालय अध्यापक (11-12)
उच्च माध्यमिक विद्यालय करहरा, मधुबनी

नीरज अपने आँफिस से वापस आकर, फ्रेश होकर चाय की प्रतीक्षा में बैठा था। चाय की प्याली रखते नीलू--" चाय है!" चाय रखने के क्रम में नीलू का मन उदास सा था, जिसे नीरज भी समझ गया था। नीरज कप उठाते हुए नीलू से-- "कुछ उदास लग रही हो! कुछ बात है क्या?" नीलू --" नहीं.....बात क्या रहेगी, बस ऐसे ही।"

दाम्पत्य जीवन का सुख अनमोल होता है, जिसमें दोनों, दोनों के मुरझाए मन को थोड़ा भी बरदाश्त नहीं करना चाहते हैं। नीरज बहुत देर तक पूछता रहा। मनाने की भी कोशिश करता रहा। लेकिन नीलू अपने उदास होने का कारण नहीं बता रही थी। क्योंकि जैसे-जैसे नीरज उदास होने का कारण पूछता था। वैसे-वैसे नीलू और हीं उदास होते जा रही थी कि भला आज कौन सा दिवस है, जिसे ये नहीं जान रहे हैं। नीलू झल्लाकर--" कुछ पता भी है कि आज कौन सा दिवस है? 'रोज डे' के लिए आपको मेरे लिए एक सूखी गुलाब भी नहीं मिली?" नीरज--" ओ.... तो हमलोगों को भी प्रेम को निभाने के लिए गुलाब की आवश्यकता होगी!" नीलू नीरज को गले लगाकर लिपट गया और मन ही मन प्रेम की प्रगाढ़ता के लिए ईश्वर को धन्यवाद किया।

बच्चों का कोना

Jyoti kumari
NPS SUHAGI

आकृति कुमारी
ps Bharat Das
Mandir
Rosera

Nisha
Ps Bharat Das
Mandir
Rosera

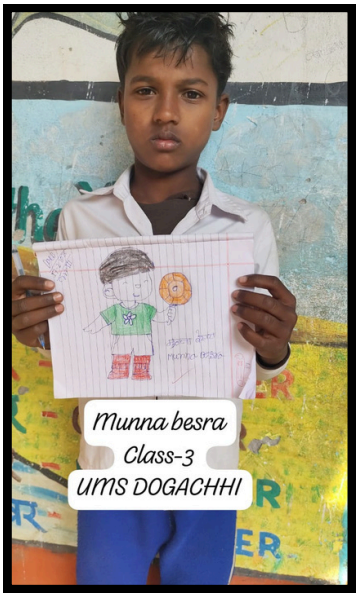
Munna besra
Class-3
UMS DOGACHHI

SIFAT NUR
NPS SUHAGI

फुलवारी शरीफ पटना

बच्चों का कोना

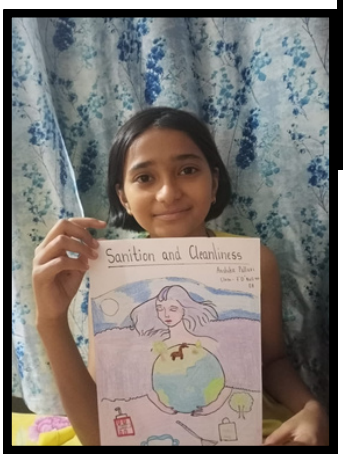

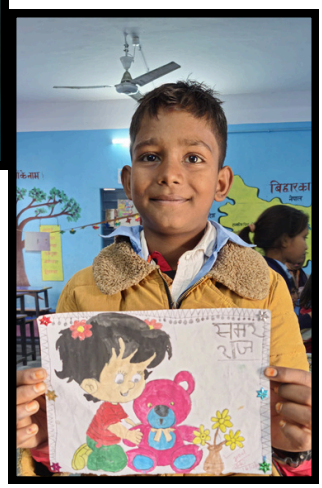

ToB प्रस्तुत करतें हैं बालमन्च यह पत्रिका बच्चों में रचनात्मक गुणों को निखारने में मदद करती है। यह पूर्णतः बच्चों की रचनाओं, पेंटिंग्स इत्यादी पर आधारित है।

बच्चों का कोना

बिल्ली मौसी की विदाई

संस्कृति चौधरी
NPS SUHAGI

आज जंगल मे चारो ओर खूब चहल पहल थी। और हो भी क्यों ना आज केटी बिल्ली का विवाह जो है। चिंटू बिलार भी बारात के लिए तैयार हो रहा है।

डोडो कुत्ते ने भोज की ज़िम्मेदारी संभाली है। मधुमक्खियों ने शहद की व्यवस्था की है। बेरी भालू तो सुबह से ढोल ही बजा रहा है। रैबी खरगोश और मंकु बंदर दोनों बारातियों को शर्बत पिला रहें हैं। तभी पैरी तोते ने कहा अरे मंकु भैया ज़रा ठीक से शर्बत बाटों। आज तो हमे खातिर करवाने का अवसर मिला है। इसी तरह उत्सवी माहौल में सब बहुत खुश थे। उधर जुगनुओं ने लाइट की व्यवस्था संभाल रखी थी। और गोटी बकरी भी नाच नाच कर सबका मनोरंजन कर रही थी। सबकुछ ठीक चल रहा था तब ही अचानक चिंटू बिलार के पिता ने उसके कान में कुछ कहा और चिंटू मंडप से उठ कर खड़ा हो गया। और गुस्से में तमतमाते हुए कहा मुझे यह विवाह नहीं करना। कैटी के पिता ने जो उपहार देने की बात कही थी उससे बहुत कम उपहार दिया गया है और मुझे एक साइन की घण्टी भी चाहिए। जिसे मैं अपने गले मे पहनूंगा। तब ही मैं विवाह करूंगा। कैटी बिल्ली बहुत घबराई हुई थी कि ना जाने अब क्या होगा।

अचानक उत्सव का माहौल सन्नाटे में बदल गया। तभी बेरी भालू ने कहा - अरे चिंटू बेटा दहेज लेना अपराध है। और दुल्हन ही सबसे बड़ी दहेज है।
हाथी दादा, जिराफ़ चाचा सभी के बहुत समझाने पर भी चिंटू बिलार पर कोई असर ना हुआ। तभी मीशु चूहे ने अपना दिमाग चलाया। और तुरंत इस बात की ख़बर महाराज शेर सिंह को दी। शेर सिंह तुरंत ही अपने दल बल के साथ पहुंचते हैं। शेर सिंह के आते ही चिंटू बिलार की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। शेर सिंह ने सबको समझाया कि दहेज लेना और देना दोनो बुरी बात है। इतना ही नहीं यह ग़ैर कानूनी भी है।

टीचर्स ऑफ बिहार की एक और बेहतरीन प्रस्तुति बालमन पत्रिका एक मासिक पत्रिका है जो सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की प्रतिभा और रचनात्मकता को केवल विद्यालयों तक सीमित न रखते हुए, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का कार्य विगत 38 महीनों से कर रही है। बालमन समय - समय पर थीम बेस्ड प्रतियोगिता करवाते हुए बच्चों को सम्मानित भी करती है। जनवरी 2022 को की गई थी। यह पत्रिका बच्चों के मन में कला और सृजनात्मकता के प्रति जागरूकता बढ़ाने, उनके विचारों और रचनात्मक क्षमताओं को मंच प्रदान करने तथा उन्हें सम्मानित कर प्रोत्साहित करने का कार्य कर रही है।
बालमन पत्रिका उन बच्चों के लिए एक विशेष मंच है, जो दुर्गम पहाड़ी और ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं और अपनी कला व प्रतिभा को प्रदर्शित करने के अवसरों की तलाश में होते हैं।

बच्चों का कोना

बिल्ली मौसी की विदाई

अब चिंटू बिलार को अपनी ग़लती का एहसास हो चुका था। उसने सबसे अपनी गलती के लिए माफी मांगी। और फिर से सब जानवर विवाह के उत्सव में पुनः आनंद लेने लगे। कोई ढोल बजा रहा था कोई शरबत बांट रहा था इस तरह से धूमधाम से कैटी बिल्ली की विदाई हुई।

सीख : दहेज लेना और देना दोनो ही अपराध की श्रेणी में आता है। हमे विवाह उत्सव में अधिक खर्च भी नही करना चाहिए। और बिना दहेज के ही विवाह करना चाहिए। दुल्हन ही सब्स बड़ी दहेज है।

उपलब्धि....🎉💐

Teachers Of Bihar के सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म Kutumb App पर सदस्यों की संख्या 80000 पूरी हुई। यह हमारी पूरी टीम के लिए महत्वपूर्ण है।

इस उपलब्धि के लिए पूरी टीम को खूब बधाई।

शिक्षकों के लिए प्रतियोगिताएं एवं अवसर

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

आज के इस आधुनिक युग में, शिक्षकों की भूमिका केवल कक्षा में पढ़ाने तक सीमित नहीं रह गई है। उन्हें विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक मार्गदर्शक, मित्र और प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य करना होता है। इस चुनौतीपूर्ण कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए शिक्षकों को निरंतर अपने ज्ञान और कौशल को विकसित करते रहना आवश्यक है। शिक्षकों के कौशल को विकसित करने हेतु सरकार, सोशल मीडिया, समाज द्वारा अनेक संसाधन एवं अवसर उपलब्ध कराएं गए है जिसका उद्देश्य शिक्षा और शिक्षक को वर्तमान चुनौतियों का सामना करते हुए बच्चों के बेहतर भविष्य निर्माण हेतु प्रोत्साहित करना है।

भारत में शिक्षकों के लिए उपलब्ध मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम

* स्वयं (Swayam): यह भारत सरकार का एक मंच है जो शिक्षकों के लिए मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जिसमें शिक्षाशास्त्र, पाठ्यक्रम डिजाइन और नेतृत्व विकास शामिल हैं।

* दीक्षा (Diksha): यह भी भारत सरकार का एक मंच है जो शिक्षकों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण मॉड्यूल, पाठ योजनाएं और मूल्यांकन प्रदान करता है।

* राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS): यह संस्थान शिक्षक प्रशिक्षण के लिए मुफ्त और खुले पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जिसमें समावेशिता और खुली स्कूली शिक्षा प्रणाली पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

* खान एकेडमी (Khan Academy): यह एक वैश्विक मंच है जो शिक्षकों को कक्षा निर्देश को बढ़ाने के लिए मुफ्त प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करता है।

* कौर्सरा (Coursera): यह प्रतिष्ठित संस्थानों से उच्च गुणवत्ता वाले पाठ्यक्रम प्रदान करता है। शिक्षण रणनीतियों, शिक्षा प्रौद्योगिकी, EQ आदि पर मुफ्त और सशुल्क दोनों पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

* एडएक्स (edX): यह अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित रणनीतियों, AI आदि से संबंधित सैकड़ों पाठ्यक्रम प्रदान करता है, जो मुफ्त में उपलब्ध हैं।

शिक्षकों के लिए प्रतियोगिताएं एवं अवसर

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

भारत में शिक्षकों को मिलने वाले सम्मान एवं पुरस्कार:
भारत में शिक्षकों को कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख पुरस्कार इस प्रकार हैं:

*** राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।**

*** पद्म श्री: यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है, जिनमें शिक्षा भी शामिल है।**

*** आचार्य पुरस्कार: यह पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।**

*** राज्य शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा अपने-अपने राज्यों में उत्कृष्ट शिक्षकों को दिया जाता है।**

विश्व में शिक्षकों को मिलने वाले सम्मान एवं पुरस्कार:
विश्व में भी शिक्षकों को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख पुरस्कार इस प्रकार हैं:

*** ग्लोबल टीचर पुरस्कार: यह पुरस्कार दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक को दिया जाता है। यह पुरस्कार वर्की फाउंडेशन द्वारा स्थापित किया गया है और इसमें 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का पुरस्कार शामिल है।**

*** यूनेस्को शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार यूनेस्को द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।**

शिक्षकों के लिए प्रतियोगिताएं एवं अवसर

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार में शिक्षकों को कई पुरस्कार मिलते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं:

* राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार भारत सरकार द्वारा दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

* राजकीय शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार बिहार सरकार द्वारा दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

* जिला शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार जिला स्तर पर दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

* ब्लॉक शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार ब्लॉक स्तर पर दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

* पंचायत शिक्षक पुरस्कार: यह पुरस्कार पंचायत स्तर पर दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

इन पुरस्कारों के अलावा, शिक्षकों को अन्य कई पुरस्कार भी मिलते हैं, जैसे कि:

* राष्ट्रपति पुरस्कार: यह पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

* राज्यपाल पुरस्कार: यह पुरस्कार राज्य के राज्यपाल द्वारा दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

* मुख्यमंत्री पुरस्कार: यह पुरस्कार राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा दिया जाता है और यह शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है।

इन पुरस्कारों के लिए शिक्षकों का चयन उनकी शैक्षणिक योग्यता, अनुभव, और उनके द्वारा किए गए उत्कृट कार्यों के आधार पर किया जाता है।

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्, कटिहार

अंकुरित अनाज

अंकुरित अनाज, साबुत अनाज के बीजों को अंकुरित करने के बाद तैयार होता है. इसे स्प्राउट्स भी कहते हैं. अंकुरित अनाज में कई तरह के पोषक तत्व होते हैं, जैसे कि प्रोटीन, फ़ाइबर, विटामिन, मिनरल्स, एंटीऑक्सीडेंट, और एन्ज़ाइम्स

कैसे बनाए अंकुरित अनाज?

स्प्राउट्स यानि अंकुरित अनाज (Sprouts) को अंकुरित बीज भी कहा जाता है। अंकुरित अनाज ऐसे बीज होते हैं, जो अनाज या फलियों को भिगोने पर निकलते हैं। यह अंकुरण प्रक्रिया आमतौर पर कई घंटों तक बीजों को भिगोने से शुरू होती है। भीगे हुए बीज सही तापमान और नमी के संपर्क में आते हैं तो कुछ दिनों के बाद इनमें अंकुर निकलने लगते हैं। अंकुरित अनाज का नाश्ता आपको दिनभर चुस्त रखेगे। इनमें पोषक तत्वों (Nutrients) की मात्रा बहुत अधिक होती है इसलिए इसका सेवन सेहत के लिए फायदेमंद होता है।

अंकुरित अनाज के फ़ायदे:

यह कैंसर और हृदय रोगों से बचाव में मदद करता है.
यह वज़न घटाने में मदद करता है.
यह पाचन तंत्र को स्वस्थ रखता है.
यह कब्ज़ जैसी समस्याओं से बचाता है.
यह शरीर की कई परेशानियों को दूर करता है, जैसे कि सूजन, एसिडिटी, और डायबिटीज़.
यह हड्डियों की मज़बूती को बढ़ाता है.
यह त्वचा को चमकदार बनाता है.

अंकुरित अनाज खाने से जुड़ी सावधानी:

कच्चे स्प्राउट्स खाने से बचना चाहिए.
गैस्ट्रिक अल्सर, डायरिया, या पेट से जुड़ी किसी बीमारी के शिकार हैं, तो बिना डॉक्टर से पूछे अंकुरित अनाज मत खाएं.

अंकुरित अनाज बनाने का तरीका:

अनाज, बीज, दाल, या फलियों को रातभर भिगोकर रखें.
फिर 2 से 3 दिन तक नमी में रखें, ताकि वह अच्छे से अंकुरित हो सके.
अंकुरित अनाज को सलाद, सूप, या उबालकर खाया जा सकता है.

स्वस्थ रहें मस्त रहें

मृत्युंजयम्, कटिहार

वृक्षासन

वृक्षासन (ट्री पोज़) एक खड़े होकर किया जाने वाला योगासन है. यह संतुलन, स्थिरता, और ध्यान को बेहतर बनाने में मदद करता है. वृक्षासन को करने से शरीर का स्वरूप पेड़ जैसा दिखता है.

वृक्षासन करने का तरीका:

एक पैर के तलवे को दूसरे पैर के अंदरूनी हिस्से पर रखें.
हाथों को ऊपर की ओर बढ़ाएं या प्रार्थना की मुद्रा में हृदय केंद्र पर लाएं.

वृक्षासन के लाभ:

यह कूल्हों और पैरों को मज़बूत करता है.

यह शरीर के संरेखण और मुद्रा को बेहतर करता है.

यह शांति और मानसिक संतुलन को बढ़ावा देता है.

यह शरीर में लचक बढ़ाने में मदद करता है.

यह रीढ़ और पेट को स्वस्थ रखता है.

यह पांवों की मांस-पेशियों को मज़बूत करता है.

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा से जुड़ी प्रमुख नीति एवं समाचार

1.राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के कार्यान्वयन में तेजी

2024 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में मील का पत्थर साबित हुआ. शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, और रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से कई योजनाएं लागू की गईं. हालाकि, इन बदलावों को जमीनी स्तर पर सफल बनाने के लिए निरंतर प्रयास और सुधार की आवश्यकता है. नई शिक्षा नीति के तहत 5+3+3+4 मॉडल को देश के कई राज्यों में लागू किया गया. हायर एजुकेशन में क्रेडिट बैंकिंग सिस्टम और मल्टीपल एंट्री-एग्जिट विकल्प को संस्थागत स्तर पर बढ़ावा दिया गया. प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा आधारित शिक्षा को अपनाया गया.

2.लोक परीक्षा कानून (Public Examination Act) 2024

जून 2024 में पेपर लीक की घटनाओं को रोकने के लिए केंद्र सरकार ने लोक परीक्षा कानून, 2024 यानी पब्लिक एग्जामिनेशन (प्रिवेंशन ऑफ़ अनफ़ेयर मीन्स) एक्ट, 2024 को फरवरी 2024 में पारित किया गया था. इस कानून में सख्त दंड और भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया. पेपर लीक विरोधी कानून में सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों का उपयोग करने पर 3 से 5 साल की कैद और 10 लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है. संगठित तरीके से पेपर लीक करने पर 1 करोड़ रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

3.CUET और प्रतियोगी परीक्षाओं का विस्तार

कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट (CUET) का दायरा बढ़ाया गया. सीयूईटी एग्जाम देश भर के 200 से ज्यादा यूनिवर्सिटी में एडमिशन का रास्ता है, साथ ही हर साल नई यूनिवर्सिटीज जुड़ने की संभावना होती है. इसी के मुताबिक, एनटीए लगातार सीयूईटी यूनिर्सिटी लिस्ट को अपडेट करता रहता है. SSC, UPSC और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए ऑनलाइन आवेदन और डिजिटल परीक्षा केंद्रों का विस्तार हुआ. भारत के 50 से अधिक विश्वविद्यालयों ने दो डिग्री प्रोग्राम और विदेशी संस्थानों के साथ सहयोग शुरू किया गया है।

4.डिजिटल शिक्षा का प्रभाव

डिजिटल शिक्षा और एआई आधारित लर्निंग प्लेटफॉर्म्स का उपयोग बढ़ा. ग्रामीण क्षेत्रों में PM-eVIDYA और दीक्षा पोर्टल के माध्यम से डिजिटल सामग्री की पहुंच सुनिश्चित की गई. छात्रों और शिक्षकों के लिए विशेष ऑनलाइन कोर्स और वर्चुअल क्लासरूम शुरू किए गए.

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा से जुड़ी प्रमुख नीति एवं समाचार

5.नई पहलों की शुरुआत

स्टार्टअप इंडिया मिशन के तहत स्कूल स्तर पर छात्रों को एंटरप्रेन्योरशिप की शिक्षा दी गई. ऑनलाइन उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों के लिए नालंदा पोर्टल लॉन्च किया गया. शिक्षकों की गुणवत्ता सुधारने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षक प्रशिक्षण मिशन शुरू हुए.

6.सीबीएसई ने किया एजुकेशन स्ट्रक्चर में बदलाव

सीबीएसई ने कक्षा 10वीं-12वीं के एजुकेशन स्ट्रक्चर में बदलाव करने का प्रस्ताव दिया है। प्रस्ताव में कक्षा 10वीं में भाषा को 2 से बढ़ाकर 3 और विषयों को 5 से बढ़ाकर 10 करने के लिए कहा गया है। वहीं कक्षा 12वीं में भाषा को 1 से बढ़ाकर 2 और विषयों को 5 से बढ़ाकर 6 करने के लिए कहा गया है।

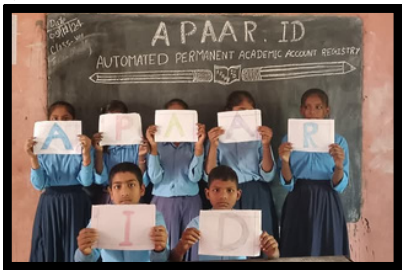

7.APAAR- वन नेशन वन स्टूडेंट आईडी

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत फरवरी 2024 में सभी छात्रों की प्राथमिक शिक्षा से हायर एजुकेशन तक कि पढ़ाई का क्रेडिट स्कोर दर्ज करने के लिए APAAR ID कार्ड लॉन्च किया गया। इससे छात्रों का सारा एकेडमिक रिकॉर्ड एक जगह इकठ्ठा रहेगा।

8.केंद्र सरकार ने खत्म किया नो डिटेंशन पॉलिसी,अब 5वीं और 8वीं कक्षा में फेल होंगे छात्र

केंद्र सरकार ने 'नो डिटेंशन पॉलिसी' को खत्म कर दिया है। अब 5वीं और 8वीं कक्षा की परीक्षा में फेल होने वाले छात्रों को अगली क्लास में नहीं भेजा जाएगा, उन्हें अगली कक्षा में जाने के लिए 2 महीने के अंदर दोबारा परीक्षा देने का मौका दिया जाएगा। केवल परीक्षा पास करने वाले बच्चों को ही आगे की क्लास में पढ़ने की अनुमति दी जाएगी।

9.साल में दो बार मिलेगा यूनिवर्सिटी में एडमिशन

यूजीसी ने यूनिवर्सिटीज और उच्च शिक्षा संस्थानों में एक साल में दो बार दाखिले की प्रक्रिया को अनुमति दे दी है। इसका मतलब है कि अब छात्रों को जुलाई और जनवरी, दोनों महीनों में एडमिशन दिया जाएगा। छात्रों का कैंपस सिलेक्शन प्रक्रिया भी दो बार होगी।

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

1. छठी तक के बच्चों को मिलेगी कंप्यूटर शिक्षा

बिहार के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए अच्छी खबर है। मिडिल स्कूलों के बच्चों को भी अब कंप्यूटर शिक्षा दी जाएगी। प्रदेश के 31 हजार 297 मध्य विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा लागू होगी। इसके साथ ही बच्चों को कंप्यूटर सिखाने के लिए शिक्षक और एक्सपर्ट भी रखे जाएंगे। दूसरे चरण में तीसरी चौथी और पांचवीं कक्षा के बच्चों को कंप्यूटर का बेसिक नॉलेज दिया जाएगा।

2.1वर्ष में दो चरण की शिक्षक बहाली : साल 2024 में शिक्षा विभाग ने बीपीएससी की दूसरे और तीसरे चरण की शिक्षक बहाली प्रक्रिया पूर्ण की. दूसरे चरण के शिक्षक बहाली में सफल हुए 96823 शिक्षकों को नियुक्ति पत्र दिया गया, वहीं तीसरे चरण में 54150 अभ्यर्थी सफल हुए हैं जिनकी नियुक्ति के लिए काउंसलिंग की प्रक्रिया जारी है.प्रधान शिक्षक और प्रधानाचार्य के पद भरे गए : हालाकि इसमें कक्षा 11-12 के लिए अभी रिजल्ट नहीं आया है, यानी लगभग 15000 से अधिक नौकरियां मिलना विभाग में बाकी है. इन सबके अलावा शिक्षा विभाग ने सरकारी विद्यालयों में कक्षा 1 से 8 के लिए प्रधान शिक्षक के पद पर 36947 नियुक्तियां की और कक्षा 9 से 12 के लिए प्रधानाचार्य के 5971 पद भरे.

3.नियोजित शिक्षक बने विशिष्ट शिक्षक : प्रदेश में लंबे समय से नियोजित शिक्षकों को राज्य कर्मी बनाने की चली आ रही मांग पर भी काम हुआ. नियोजित शिक्षकों के लिए सक्षमता परीक्षा आयोजित की गयी. परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों को प्रदेश में विशिष्ट शिक्षक के पद पर योगदान कराया गया.253761 नियोजित शिक्षक राज्य कर्मी बने :पहले चरण की सक्षमता परीक्षा में 187618 सफल हुए, जबकि दूसरे चरण में 66143 सफल हुए. ऐसे में प्रदेश में 253761 नियोजित शिक्षक राज्य कर्मी बनते हुए विशिष्ट शिक्षक बन गए. अब इन्हें सरकार की सभी सुविधाओं का लाभ मिलेगा. इस प्रकार प्रदेश में शिक्षा विभाग ने सिर्फ विद्यालयों में ही शिक्षक और हेड मास्टर के 447652 पदों को सिर्फ इस वर्ष भरा है. इन लोगों को नई नौकरियां मिली है.

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

छुट्टियों की लिस्ट डाउनलोड करने के लिए क्लिक करें

4.त्योहारों की छुट्टियां को फिर से बहाल की गई : शिक्षक संगठनों की लबे समय से मांग थी कि उनकी दीपावली, छठ जैसे पर्व त्योहार और गर्मी की छुट्टी पूर्व की भाति बहाल की जाए. डॉ एस सिद्धार्थ ने साल 2025 का कैलेंडर जारी करते हुए इन छुट्टियों को फिर से बहाल करते हुए ठंड की छुट्टी भी जारी की. इस फैसले से सभी शिक्षक काफी खुश हुए

5.शिक्षकों के स्थानांतरण की मांग को किया पूरा :इसके अलावा बिहार विशिष्ट शिक्षक संशोधन नियमावली जारी हुआ और प्रदेश में शिक्षकों के लबे समय से स्थानांतरण की चली आ रही मांग पर भी काम हुआ. स्थानांतरण के लिए आवेदन की प्रक्रिया पूरी हुई. एसीएस ने स्पष्ट कर दिया कि जनवरी में जब विद्यालय खुलेंगे तो स्थानांतरण के लिए आवेदन करने वाले शिक्षकों को नई जगह पर पोस्टिंग दी जाएगी

6.तकनीक का इस्तेमाल विद्यालयों में बढ़ा :प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विकसित करने के लिए शिक्षा विभाग ने सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों और बच्चों के अटेंडेंस के लिए तकनीक का सहारा लिया. सुबह में स्कूल पहुंचने के समय और स्कूल से निकलने के समय पोर्टल पर जाकर इन और आउट का पंच करने का निर्देश जारी हुआ. इससे विद्यालयों में शिक्षकों की उपस्थिति बढ़ी. इसके अलावा शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव ने वर्चुअल मोड में वीडियो कॉल करके विद्यालयों का निरीक्षण कार्य शुरू किया.

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

7.शुरू हुआ ट्रांसपेरेंट निरीक्षण :स्कूल के इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में काफी काम हुए. प्रदेश के ऐसे विद्यालय जहां बच्चे बोरे पर बैठकर पढ़ाई करते थे, वहां बेंच-डेस्क उपलब्ध कराया गया. हालाकि अभी भी निरीक्षण के क्रम में यह बातें निकलकर सामने आती है कि स्कूल में बेंच-डेस्क उपलब्ध नहीं है और बच्चे बोरा पर बैठकर पढ़ाई करने को मजबूर हैं.। बोरे वाली स्थिति पाए जाने पर एसीएस शिक्षा की विभाग के अधिकारियों को हरकाना और कार्रवाई करना शुरू किया. निरीक्षण में विद्यालय में शिक्षक की उपस्थिति नहीं मिली तो उसपर भी कार्रवाई की. वीडियो कॉल से निरीक्षण के क्रम में यह भी देखा कि एप्लीकेशन पर स्कूल के कितने शिक्षकों ने अटेंडेंस बनाया है और अभी के समय वह शिक्षक कहां हैं।

8.हर महीने उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार की शुरुआत : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षा विभाग ने प्रदेश के सभी सरकारी विद्यालयों में दो बार विद्यालयों की रैंकिंग तय करने के लिए प्रक्रिया तैयार की. इसके अलावा नवंबर महीने से उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को पुरस्कृत करना शुरू किया. इससे शिक्षक नवाचार करते हुए बच्चों को शिक्षा देने के लिए प्रेरित हुए. शिक्षा विभाग ने विद्यालयों में खेल को भी बढ़ावा देने का निर्णय लिया और विद्यालय स्तरीय खेल प्रतियोगिता बड़े लेवल पर आयोजन किया गया.

शिक्षा जगत की खबरें

रिपोर्ट : अभिषेक कुमार, मुजफ्फरपुर

बिहार:- शिक्षा से जुड़ी प्रमुख खबरें

09. डीईओ को वित्तीय कार्यों से मुक्त किया गया

बिहार सरकार ने शिक्षा व्यवस्था में बड़ा बदलाव करते हुए सरकारी स्कूलों के विकास कार्यों की जिम्मेदारी बिहार राज्य शैक्षणिक आधारभूत संरचना विकास निगम (BSEIDC) को सौंपी है. अब जिला शिक्षा पदाधिकारी सिर्फ शैक्षणिक गुणवत्ता सुधार पर ध्यान देंगे. नई व्यवस्था 1 अप्रैल से लागू होगी।

10.बिहार में अब सरकारी स्कूलों को फाइव स्टार रैंकिंग, साल में दो बार एक से पांच सितारा दर्जा मिलेगा:-

स्कूलों को वन स्टार से लेकर फाइव स्टार तक की रैंकिंग होगी। इसका मतलब यह हुआ है कि रैंक मिलने के बाद अब बिहार में वन स्टार से लेकर फाइव स्टार स्कूल होंगे। स्कूलों की रैंकिंग के लिए जो मानक तय किए गए हैं उनमें कई बातों का जिक्र होगा। मसलन – विद्यार्थियों की परीक्षा के औसत प्राप्तांक, स्कूल में संचालित होने वाली गतिविधियां, स्कूल की पढ़ाई, स्वच्छता, शिकायत निवारण, साफ-सफाई, संसाधन के उपयोग आदि रैंकिंग के मानक होंगे। इसके कुल 100 अंक होंगे । कुल 100 अंकों में 85 अंक आने पर स्कूल को फाइव स्टार का दर्ज दिया जाएगा। 75-84 आने पर फोर स्टार, 50-74 आने पर थ्री स्टार, 25-49 आने पर डबल स्टार और 0-24 अंक आने पर वन स्टार मिलेगा।

महिला सशक्तिकरण के लिए क्या करती हैं शिक्षिकाएं

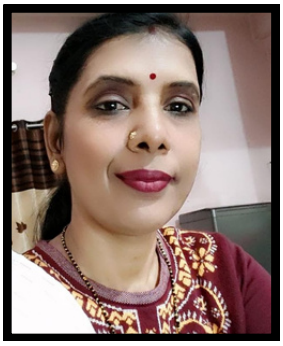

मधु प्रिया
M.S Rampur BMC FORBESGANJ
ARARIA

मैं मानती हूं कि लड़कियों की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है और इस दिशा में मैंने हमेशा अपने प्रयास किए हैं। मैंने आत्म-रक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने की कोशिश की है, ताकि लड़कियां अपनी सुरक्षा को लेकर सजग रहें। साथ ही, मैंने लड़कियों में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा दिया और उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन करने का प्रयास किया। मैंने युवाओं को शरीर में होने वाले हार्मोनल परिवर्तनों और उनके प्रभाव के बारे में भी महत्वपूर्ण जानकारी दी। मैं हमेशा लड़कियों को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने की दिशा में काम करती रहूंगी.

पुष्पा प्रसाद
राजकीयकृत कन्या मध्य विद्यालय
कुचायकोट, गोपालगंज

समाजिक प्रताड़ना से लड़ने का ज्ञान, युवा अवस्था की गलतियों से परे रहने की सीख तथा अपने जीवन को एक अच्छे मुकाम तक पहुंचाने के लिए एक सही मार्गदर्शन इत्यादि.....ये बात मैं बच्चियों को सशक्त बनाने के लिए सिखाती हूं

मृदुला सिन्हा
मध्य विद्यालय सिंदुआर

मैं यह मानती हूं कि शिक्षा को सामाजिक और मानसिक रूप से प्रभावी बनाना बहुत आवश्यक है। मैंने हमेशा बच्चियों को आत्मविश्वासी बनने के लिए प्रेरित किया, ताकि वे अपने स्वास्थ्य और अधिकारों पर खुलकर बात कर सकें। मेरे प्रयासों के कारण, बच्चे अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर राज्य स्तर तक विज्ञान गतिविधियों में भाग ले रहे हैं। मेरी गतिविधि आधारित शिक्षण शैली ने बच्चियों को नवाचार और समाधान खोजने में सक्षम बनाया है। मेरा उद्देश्य हमेशा यही रहा है कि मैं बच्चों को सशक्त बनाऊं और उन्हें एक बेहतर भविष्य की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करूं.

महिला सशक्तिकरण के लिए क्या करती हैं शिक्षिकाएं

ज़ेबा आरा
UMS DOGACHCHI
KISHANGANJ

बेटियाँ
तीन हुरफों का लफ्ज़ है, लेकिन बेटी हैं तो सब हैं।
मुझे भी बहुत अरमान है अपने इलाके, अपने सूबे अपने मुल्क की हर एक बेटी को कामयाब होते देखने का ताकि वो कभी भी किसी की न हों मुझे अपने स्कूल की बच्चियों के लिए वो काम करना है जो उनके भलाई के लिए हो फक्र है अपनी बच्चियों पे मुझे उनके सुकून बहुत है।

डॉ. स्वराक्षी स्वरा
खगड़िया, बिहार

शिक्षक होने के नाते मैं सभी बच्चों (लड़के/लड़कियों) को सशक्त बनाने की प्रेरणा देती हूं। फिर भी लड़कियों के लिए विशेष करना होता है।जैसे...
उन्हें अपनी झिझक तोड़ने का मौका प्रदान करना।
उन्हें अपनी समस्या का समाधान स्वयं ढूंढने देना ।
सही मार्गदर्शन करना।
सही वक्त पे सही बात कहने की सीख देना।
उनके द्वारा किए गए अच्छे कामों पर पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करना, इसके अलावा अपनी एक कविता सुनाना
हां गर्व मुझे मैं नारी हूं, अन्नपूर्णा अवतारी हूं*
दानव दुष्ट दलन करने को करती सिंह सवारी हूं*

बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिए मैं निम्नलिखित कार्य करती हूं:-
1. बालिकाओं के साथ हर सप्ताह मीटिंग करना,
2. मीना मंच को विद्यालय में उत्साहित करना
3. स्कूल नहीं आने वाली बच्ची के घर विजिट करना तथा उनके माता-पिता को समझाना
4. कक्षा में सक्रिय भागीदारी के लिए बच्चियों को प्रेरित करना।

मनु कुमारी, विशिष्ट शिक्षिका, मध्य विद्यालय सुरीगाँव, बायसी, पूर्णियाँ, बिहार

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

दीक्षा एप पर नामांकन कराने में जिले को तीसरा स्थान

राज्य स्तरीय कार्यशाला को संबोधित करते केशव कुमार .

वरीय संवाददाता, मुजफ्फरपुर

पटना में एक होटल में प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग आधारित एमआइपी को लेकर राज्यस्तरीय कार्यशाला हुई. राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् एवं बिहार शिक्षा परियोजना परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग कार्यक्रम में जिला स्तरीय तकनीकी समूह के दो सदस्य एवं जिला शिक्षक समन्वयक ने भाग लिया.बैठक का उद्देश्य पीबीएल कार्यक्रम की प्रगति की समीक्षा करना, अबतक की उपलब्धियों पर चर्चा करना व आगामी योजनाओं की रणनीति तय करना व नवंबर, दिसंबर व जनवरी में पीबीएल आधारित एमआइपी के क्रियान्वयन से संबंधित आयोजित गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा करना था.अक्टूबर में आयोजित जिला स्तरीय पीबीएल मेले के दौरान सभी जिलों के द्वारा चयनित उत्कृष्ट तीन प्रदर्शों का चयन किया गया था. जनवरी के लिए निर्धारित पीबीएल आधारित एमआइपी के क्रियान्वयन में मुजफ्फरपुर जिले के कुल 1,391 विद्यालयों के

- 1,391 विद्यालयों के 1140 शिक्षक व शिक्षिकाओं ने सर्वाधिक नामांकन कराया

1140 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने दीक्षा एप पर नामांकन किया है. जिसके कारण मुजफ्फरपुर जिले को 19 जनवरी तक सर्वाधिक नामांकन करने वाले जिलों में तीसरा स्थान प्राप्त हुआ है. राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी रंजन सिंह और संयुक्त निदेशक डॉ रश्मि प्रभा ने पीबीएच कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी. कार्यशाला में इस बात की भी जानकारी दी गयी कि 27 फरवरी को पटना में राज्य स्तरीय पीबीएल मेले का आयोजन किया जायेगा. कार्यशाला में जिले से शामिल होने वाले शिक्षक शिक्षा समन्वयक मनोज कुमार, जिला तकनीकी समूह के सदस्य मुरौल के शिक्षक केशव कुमार व मोतीपुर के शिक्षक पप्पू पंकज ने कहा कि यह कार्यशाला प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग को जमीनी स्तर पर लागू करने और शिक्षा प्रणाली में नवाचार लाने की दिशा में अहम पहल साबित हुई.

कैंपस प्रभात — मुजफ्फरपुर, सोमवार 30.12.2024 | 04

...शन की तैयारी, बनेगी सेंट्रलाइज्ड मेरिट लिस्ट | नवाचार के छोड़े तीर, बदली शिक्षण व्यवस्था की तस्वीर | prabhatkhabar.com

नवाचार के छोड़े तीर, बदली शिक्षण व्यवस्था की तस्वीर

प्रकाश कुमार, समस्तीपुर

शिक्षक ऋतुराज जयसवाल.

नवाचार इंसान के स्वभाव में शामिल हैं और यह काम कोई शिक्षक करे तो उसका लाभ उसका एक शिष्य नहीं बल्कि पीढ़ियां उठाती है, पूरा समाज उठाता है. शिक्षक महज तीन अक्षरों का शब्द है, लेकिन इसका प्रभाव ऐसा है कि इसमें इंसान का दिल-दिमाग, आचार-विचार में आमूल बदलाव लाने की ताकत है. उत्क्रमित मध्य विद्यालय मोहनपुर के शिक्षक ऋतुराज जायसवाल नवाचारों को अपनाकर अपनी मेहनत और लगन के बूते शिक्षा को नया आयाम देने का जतन किया. जिसकी सराहना जिला से लेकर देश के अन्य राज्यों में हो रही है. कठिन लगने वाले अंग्रेजी को सरल रूप दिया. किताबी ज्ञान से हटकर वीडियो के माध्यम से शिक्षण का नया तरीका ईजाद किया ताकि नौनिहालों को बेहतर शिक्षा ...

को एक सुनहरे कल में तब्दील किया जा सके. ऋतुराज बताते है कि जब परंपरागत पद्धति से बच्चों को पढ़ाना शुरू किया तो एक वर्ष तक प्रयासरत रहने के बाद भी आशानुरूप परिणाम नहीं मिले. किताबी ज्ञान तो दुनिया का हर एक शिक्षक बच्चों को देते है. बच्चों को प्रोजेक्टर के माध्यम से पढ़ाना प्रारंभ किया. वीडियो के माध्यम से दी जाने वाली इस शिक्षण व्यवस्था से बच्चों को कठिन विषय भी रुचिकर लगने लगे. शिक्षक शिक्षा में नवाचार की ...

शिक्षक भी टेक्नोलॉजी प्रशिक्षक के रूप में काफी मजबूत होंगे

अपना अनुभव साझा कर शिक्षक ऋतुराज ने बताया कि एससीईआरटी की यह पहल बहुत ही सार्थक पहल है तथा इससे बच्चों को तो लाभ पहुंचेगा ही. साथ ही शिक्षक भी टेक्नोलॉजी प्रशिक्षक के रूप में काफी मजबूत होंगे एवं अपनी शिक्षा में गुणवत्ता तथा टेक्नोलॉजी दोनों को शामिल कर अपनी पढ़ाने की कला को और भी सुगम तथा ज्ञानवर्धक बनायेंगे. अभी के समय में शिक्षकों को डिजिटल स्ट्रांग होना बहुत आवश्यक है. उन्होंने बताया कि बच्चों के सामने अपना ज्ञान बांटना और कैमरे के सामने तैयार होकर बिना पुस्तक देखें किस प्रकार से हम कक्षाएं संचालित कर सकते हैं यह अनुभव शिक्षकों को और भी मजबूत बना रहा है. उन्होंने बताया कि राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार, पटना इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रयत्नशील है तथा राज्य के सरकारी विद्यालयों, शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाओं के शिक्षक, शिक्षक-प्रशिक्षक को एससीईआरटी में विषयवार वीडियो बनाने के लिए आमंत्रित करते हैं. इन वीडियो के माध्यम से बच्चे बिना किसी बाधा के कभी भी अपनी पढ़ाई को जारी रख सकते हैं तथा अपने विषय से संबंधित शंकाओं का समाधान कर सकते हैं.

आवश्यकता शिक्षक समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है. शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूली शिक्षा दोनों का आपस में गहन संबंध है जो कि यह एक दूसरे को प्रभावित करते है. हाल ही में पीएम ई- विद्या के अंतर्गत डीटीएच दूरदर्शन एवं एससीआरटी बिहार के यूट्यूब पेज पर इनके द्वारा बनाएं कंटेंट का प्रसारण किया जा रहा है.

क्या है पीएम ई विद्या योजना: इंटरनेट या संचार की अन्य सुविधाओं की कमी सरकारी स्कूलों के बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई में हमेशा बाधा बनकर उभरती है. इससे निजात दिलाने और र सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मल्टीमोड एक्सेस डिजिटल/ऑनलाइन के जरिए पढ़ाई के लिए पीएम ई विद्या योजना की शुरुआत की गयी है. पीएम ई-विद्या चैनल के जरिए पहली से पहली और 12वीं तक की पढ़ाई की जा सकेगी. यह सेवा डीटीएच, एयरटेल, टाटा स्काई, डेन नेटवर्क पर उपलब्ध रहेगी. यह सभी चैनल एससीईआरटी द्वारा मान्यता प्राप्त हैं. शिक्षक ऋतुराज को पीएम ई-विद्या डीटीएच टीवी चैनल पर प्रसारित होने वाले वीडियो लेक्चर के लिए चुना गया है. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एससीईआरटी) वीडियो लेक्चर तैयार कराने से पहले उन्हें प्रशिक्षण दिया गया ...

डीपीओ एसएसए मानवेंद्र कुमार राय ने बताया कि खासकर सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों की शिक्षा में अवरोध आए, जिसे देखते हुए बच्चों को पूरक शिक्षा प्रदान करने और शिक्षा की पहुंच का एक लचीला तंत्र तैयार करने के लिए पीएम ई-विद्या वन क्लास वन चैनल कार्यक्रम चलाया जा रहा है. इसमें चैनल की संख्या 12 से बढ़ाकर 200 तक कर दी गई है. उक्त चैनलों पर कक्षा एक से 12वीं तक के पाठ्यक्रम पर आधारित उत्कृष्ट गुणवत्ता की शिक्षण सामग्री का प्रसारण 24 घंटे सातों दिन डीटीएच चैनलों पर किया जा रहा है. इस अति महत्वाकांक्षी योजना के अंतर्गत बिहार राज्य को भी 5 डीटीएच टीवी चैनल प्रदान किए गए हैं जिसका उद्देश्य राज्य के शिक्षार्थियों की आवश्यकता रुचि के अनुसार, विषयवार, कक्षा वार (कक्षा 1 से कक्षा 12 तक) वीडियो व ईकंटेंट का निर्माण करना है ...

आसार | पीएमश्री योजना के तहत नए स्कूल शामिल करने की घोषणा संभव, डिजिटल शिक्षा की मांगों को पूरा करने के लिए आवंटन बढ़ाने के संकेत

शिक्षा के बजट आवंटन में कौशल-नवाचार पर होगा जोर

नई दिल्ली, विशेष संवाददाता। केंद्र सरकार आम बजट में शिक्षा का बजट पंद्रह से बीस प्रतिशत तक बढ़ा सकती है। इसके साथ ही कौशल विकास प्रशिक्षण के लिए महत्वपूर्ण घोषणाएं भी हो सकती हैं और बजट आवंटन बढ़ाया जा सकता है।

पिछले कुछ सालों में शिक्षा का बजट लगातार बढ़ाया गया है। वर्ष ...4 में इस क्षेत्र को 1.48 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए। इसमें सबसे अधिक 73,498 करोड़ रुपये स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग को दिए गए। इस बार स्कूली शिक्षा का बजट 80 हजार करोड़ रुपए के करीब पहुंच सकता है।

उच्च शिक्षा में नई शिक्षा नीति की जरूरतों के अनुरूप रिसर्च, इनोवेशन और नए संस्थानों के लिए आवंटन बढ़ाने के स्पष्ट संकेत हैं। सूत्रों ने कहा, बजट में रिसर्च और इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत मैकेनिज्म तैयार करने पर जोर दिया जा सकता है। पीएमश्री योजना के तहत नए स्कूलों को शामिल करने की घोषणा भी बजट में संभव है।

जीडीपी के छह फीसदी खर्च के लक्ष्य से अभी दूर

पूर्व केंद्रीय शिक्षा सचिव एके रथ का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा और उच्च शिक्षा के लिए बजट आवंटन में वृद्धि हुई है। लेकिन यह जीडीपी के छह फीसदी खर्च के लक्ष्य से अभी दूर है। इस बजट में आवंटन बढ़ाकर इसे कम से कम साढ़े चार फीसदी तक पहुंचाया जाए तो भी एक कदम और आगे बढ़ेगा।

वित्तीय सहायता की प्रगति का खाका हो सकता पेश

बजट में पिछले साल उच्च शिक्षा के लिए 10 लाख रुपये तक के लोन पर वित्तीय सहायता देने की घोषणा की गई थी। इसके लिए नया पोर्टल भी तैयार कर लिया गया है। इसके तहत छात्रों को बिना किसी गारंटर के एजुकेशन लोन मिलेगा। सरकार बजट में इस योजना की प्रगति का खाका पेश कर सकती है।

डिजिटल शिक्षा के लिए बढ़ सकता है बजट आवंटन

महामारी के बाद ऑनलाइन शिक्षा का चलन बढ़ा है। उम्मीद की जा रही है कि सरकार डिजिटल शिक्षा के लिए बजट आवंटन को बढ़ाएगी। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए पिछले कुछ वर्षों में कई प्रयास किए गए हैं। इस बार केंद्रीय बजट में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को और प्रभावी बनाने के लिए भी कदम उठाए जा सकते हैं।

नवाचार को मिल सकता है बढ़ावा

पीएम इंटर्नशिप योजना को आगे बढ़ाने के लिए अतिरिक्त आवंटन की घोषणा बजट में संभव है। इसके अतिरिक्त हाइब्रिड शिक्षा के लिए आधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचे पर जोर अधिक समावेशी शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए महत्वपूर्ण होगा। व्यावहारिक कौशल विकास के साथ 2025 का बजट नवाचार को बढ़ावा दे सकता है।

सरकारी स्कूलों के बच्चे पाठ पढ़ने व गणित में हुए बेहतर

संवाददाता, पटना

बिहार के सरकारी स्कूलों के बच्चों में तुलनात्मक रूप से पाठ पढ़ने के स्तर और गणित की बेसिक जानकारी के स्तर में आंशिक सुधार हुआ है. खासतौर पर भाषा के स्तर में सकारात्मक सुधार है. यह खुलासा असर (एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट) 2024 की मंगलवार को जारी रिपोर्ट में हुआ है. बिहार के संदर्भ में यह रिपोर्ट सभी जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों के अध्ययन पर ...

तीन के 15.6% बच्चे ही कक्षा दो के स्तर का पाठ बेहतर ढंग से पढ़ सकते थे. 2022 में यह संख्या 12.9% ही थी. वहीं, वर्ष 2024 में यह आंकड़ा 20.1% तक पहुंच गया है. इसी वर्ग में निजी स्कूलों में पाठ पढ़ने का स्तर कम हुआ है. कक्षा तीन के स्तर पर हुए सुधार के पीछे फंडामेंटल लिट्रेसी एंड न्यूमरेसी किट अहम मानी जा रही है, जिसे सरकारी स्कूलों में दिया गया है. सरकारी स्कूलों में कक्षा तीन के घटाव करने वाले बच्चों का प्रतिशत बेहतर हुआ है. 2014 में यह आंकड़ा ...

निजी स्कूलों में घटा है पाठ पढ़ने का स्तर

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा पांच के ऐसे बच्चे जो कक्षा दो के स्तर का पाठ पढ़ सके, उनका प्रतिशत 2014 की तुलना मे 2024 मे घटा है. वर्ष 2014 मे यह 44.6% था, जो वर्ष 2024 घटकर 41.2% रह गया है. हालांकि 2022 की तुलना मे पाठ पढ़ने के स्तर 2024 मे चार प्रतिशत का इजाफा हुआ है. निजी स्कूलों मे तुलनात्मक रूप मे पाठ पढ़ने का स्तर घटा है. कक्षा आठ मे पाठ पढ़ने के स्तर ...

पहली के 5.8% बच्चे ही कर पाते हैं भाग

असर के अनुसार कक्षा एक के 31.9% बच्चे नौ तक के अंक पहचान नहीं पाते हैं. जबकि 34.7% बच्चे पहचान लेते है. इस कक्षा के 8.2% बच्चे घटाव और 5.8% बच्चे ही भाग कर पाते हैं. कक्षा तीन के 6.5% और कक्षा पांच के 3.5% बच्चे नौ तक के अंक पहचान नहीं सके. हालांकि कक्षा आठ मे औसतन ...

पाठ पढ़ने में लड़कियां आगे

कक्षा और लिंग के अनुसार पाठ पढ़ने के स्तर के आंकड़े भी दिलचस्प हैं. कक्षा दो स्तर का पाठपढ़ने मे कक्षा पांच की लड़कियां लड़कों से आगे रही हैं. 2024 मे कक्षा पांच के 43.1% बच्चे पाठ पढ़ सके, वहीं 44% लड़कियां पाठ पढ़ने मे सक्षम रहीं.

नामांकन कराने में भी लड़कियां आगे

खास बात यह है कि बिहार के सरकारी स्कूलों में लड़कों की तुलना मे लड़कियां अधिक नामांकित हैं. 2024 मे कुल बच्चों मे कक्षा एक से पांच तक मे 76.1% लड़के नामांकित हैं. लड़कियों के नामांकन का यह प्रतिशत 83.4 है. 2024 मे कक्षा छह से आठ तक मे कुल लड़कों मे से 86.2% का नामांकन हुआ है.

बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में संस्कृति की पुस्तक

पोठिया, निज संवाददाता। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल हुई किशनगंज जिले के पोठिया प्रखंड की तैयबपुर निवासी सरोज कुमार चौधरी की दस वर्षीय पुत्री संस्कृति चौधरी। संस्कृति चौधरी ने इस उपलब्धि प्राप्त कर एक बार फिर किशनगंज जिले का नाम रौशन की है।

संस्कृति ने दस वर्ष के उम्र में ही बाल साहित्य की पुस्तक शरारती बंदर मन्कु लिख डाली थी। संस्कृति चौधरी की इस उपलब्धि के कारण उन्हें इंडिया

संस्कृति ने महज 10 वर्ष की उम्र में पुस्तक लिखी थी

बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 2024 में स्थान मिला है। बताते चले कि संस्कृति एक सुदूर ग्रामीण क्षेत्र से आती है। संस्कृति चौधरी को बहुत छोटी उम्र से ही कहानियां पढ़ने और लिखने का शौक रहा है। इसी क्रम में उनकी पुस्तक जो कि अमेजॉन और फ्लिपकार्ट जैसे विभिन्न प्लेटफॉर्म पर खूब धमाल मचा चुकी है। संस्कृति के इस उपलब्धि के लिए जिले के लोग काफी उत्साहित हैं और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की है। इससे पहले जहां संस्कृति चौधरी की लिखी पुस्तक को जिलापदधिकारी विशाल राज ने अवलोकन किया तो वही राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ अर्लेकर भी प्रोत्साहित कर चुके हैं।

कुछ अलग | टीचर्स ऑफ बिहार के प्लेटफॉर्म को देश भर में मिली पहचान, शाहरुख खान से लेकर अमिताभ बच्चन भी कर चुके हैं तारीफ

बिहार में 'शिक्षक समूह' के कार्यों को एनसीईआरटी ने सराहा

हि विशेष

रिंकू झा

पटना। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने 'शिक्षक समूह' टीचर्स ऑफ बिहार के शिक्षकों के काम की सराहना की है। इस समूह से बिहार के सरकारी स्कूलों के करीब दो लाख शिक्षक जुड़े हैं। उनमें से करीब 50 हजार अपने-अपने स्कूलों में अभिनव प्रयोग कर रहे हैं। एनसीईआरटी ने अन्य राज्यों को भी शिक्षकों के ऐसे समूह बनाने को कहा है, ताकि सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के कार्य को पहचान मिले।

सभी राज्यों को ऐसा समूह बनाने का दिया निर्देश

केस 1 उत्क्रमित मध्य विद्यालय दीघौत जमुई के प्रधान शिक्षक अभिषेक कुमार हैं। स्कूल में 30 से अधिक छात्रों को हर साल राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृत्ति मिलती है। स्कूल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सभी प्रकार के आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था अपने वेतन से करते हैं।

केस 2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शाहपुर, सिंधवालिया (गोपालगंज) के प्राधानाध्यापक अष्टभुजा सिंह बच्चों की ड्रेस की व्यवस्था करते हैं। हर शनिवार बच्चे अलग-अलग रंगों की ड्रेस पहन कर आते हैं। शैक्षणिक स्तर पर गतिविधि आधारित पढ़ाई करवाई जाती है।

केस 3 न्यू प्राथमिक विद्यालय तरहनी, कुदरा (कैमूर) के शिक्षक सिकेंद्र कुमार सुमन कक्षा में तकनीकी सहायता से पढ़ाई करवाते हैं। टेक्नोलॉजी इंट्रीग्रेटेड माध्यम से छात्रों को निपुण बनाते हैं। इससे शिक्षा का स्तर इनके स्कूल में काफी बदल गया है। बच्चे टेक्नो फ्रेंडली हो गये हैं।

एनसीईआरटी ने 26 जुलाई को लर्निंग प्रोफेशनल लर्निंग कम्यूनिटी विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया था। इसमें टीचर्स ऑफ बिहार के शिक्षक भी जुड़े थे। मौके पर एनसीईआरटी ने टीचर्स ऑफ बिहार की तारीफ की। एनसीईआरटी ने बिहार के ऐसे शिक्षकों के वीडियो भी मांगे हैं। इन वीडियो को एनसीईआरटी की वेबसाइट पर डाला जाएगा। कभी सीटी बजाकर स्कूल में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाना तो कभी उन्हें ईमानदारी की सीख देना, जैसे नायाब काम टीचर्स ऑफ बिहार से जुड़े शिक्षक करते हैं। माध्यमिक विद्यालय बांका की शिक्षिका रूबी कुमारी के पढ़ाने का एक वीडियो काफी वायरल हुआ था। इसको शाहरुख खान, अमिताभ बच्चन, आनंद महिंद्रा जैसे कई नामी लोगों ने साझा किया।

"टीचर्स ऑफ बिहार के शिक्षक बहुत बेहतर काम कर रहे हैं। सैकड़ों शिक्षक इनोवेटिव काम कर रहे है। इस तरह के शिक्षकों का ग्रुप अन्य राज्यों में भी होना चाहिए।
-डॉक्टर चारू स्मिता मल्लिक, असिस्टेंट प्रोफेसर, एनसीईआरटी

"एनसीईआरटी ने बिहार के शिक्षकों के काम को सराहा है। बिहार के हजारों शिक्षक इनोवेटिव काम करके स्कूल को बेहतर करने में लगे हैं। इससे शिक्षकों की पहचान देश-विदेश में भी हो रही है। -शिव कुमार, कोऑर्डिनेटर, टीचर्स ऑफ बिहार

विविध सुर्खियों में

संकलन : मृत्युंजय ठाकुर, पूर्वी चम्पारण

ई-शिक्षाकोष ऐप से संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु टीचर्स ऑफ बिहार के द्वारा आयोजित लेट्स टॉक में शामिल हुए पटना जिले के जिला शिक्षा पदाधिकारी संजय कुमार

नवाचार के सहारे विद्यालय के विद्यार्थियों के जीवन में भर रहे रंग

कार्यक्रम को लेकर हुआ लेट्स टॉक का आयोजन

बालमन पत्रिका से निखर रहीं बच्चों की प्रतिभा

एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (असर) 2024 की रिपोर्ट में बिहार की शिक्षा को लेकर हुए कई खुलासे

सरकारी स्कूलों के बच्चे पाठ पढ़ने व गणित में हुए बेहतर

टीचर्स ऑफ बिहार के माध्यम से प्रेरणा लेकर शिक्षक बदल रहे हैं सरकारी विद्यालयों की तस्वीरें

कलकारी में जुटेंगे देशभर के बच्चे, नवाचार पर होगी चर्चा

प्रज्ञानिका

www.teachersofbihar.org

अगर आप एक शिक्षक या शिक्षा के अन्य हितधारक हैं और शिक्षा में अपने नवाचार, अनुभव या विचारों को साझा करना चाहते हैं, तो 'प्रज्ञानिका' आपके लिए एक बेहतरीन मंच है।

इस पत्रिका के माध्यम से आप अपने शैक्षिक प्रयोगों, अध्यापन पद्धतियों और नवाचारों को पूरे देश में पहुंचा सकते हैं।

https://chat.whatsapp.com/Ko2ST5AI7ohGWj1vzFf4On

हमसे जुड़ने के लिए उपर दिए गए लिंक पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करें

PRAGYANIKA
WhatsApp group